RNI No.MPHIN/2002/07269

वर्ष-17, अंक-1 अप्रैल-जून 2018 मूल्य-20/- रुपए

रघुकलश

सामाजिक पत्रिका

D-17002/18
आपकी
खामोशी
आपकी दुश्मन है
अब नहीं मुंह मोड़ना,
मुंहतोड़ जवाब देना
घर हो या बाहर, स्कूल-कॉलेज हो या दफ्तर
किसी भी बुरी नजर को अनदेखा न करना
गलत हरकतों की कोशिश से मुंह मोड़ने की
गलती मत करना, बल्कि मुंहतोड़ जवाब देना
मध्यप्रदेश पुलिस का मोबाइल एप MPeCop
संकट के समय युवती के पाँच परिजनों
एवं डायल 100 को पहुँच जायेगा SMS
महिला हेल्पलाइन 1090 | MPeCop मोबाइल एप | डायल 100
मध्यप्रदेश पुलिस - हर कदम आपके साथ
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी
आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2017

रघुकलश

त्रैमासिक सामाजिक पत्रिका

RNI No. MPHIN/2002/07269

वर्ष : 17, अंक : 1 | अप्रैल-जून 2018 | मूल्य : रु.20/-

संपादक की कलम से

संजीदा पत्रकारिता के प्रतीक गोविंदलाल वोरा

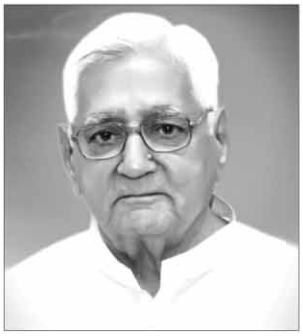

अमृतसंदेश के प्रधान संपादक गोविंदलाल वोरा के इस नश्वर संसार से महाप्रयाण के साथ ही हमने एक ऐसे प्रखर सत्ता से हमेशा लोहा लेने वाले और सत्ता के सामने कभी न झुकने वाले पत्रकार को हमेशा-हमेशा के लिए अपने बीच से खो दिया है। स्व. श्री वोरा संजीदा पत्रकारिता के प्रतीक पुरोधा के रुप में न केवल छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश बल्कि समूचे पत्रकार जगत में जाने-पहचाने जाते थे और उनकी यही खूबी उन्हें समाज और पत्रकारिता जगत में एक विशिष्ट स्थान दिलाती थी। पत्रकारिता की व्यस्ततापूर्ण और भागमभाग से भरी प्रतिस्पर्धात्मक जिंदगी जीते हुए भी स्व. श्री वोरा ने कभी भी सामाजिक सरोकारों की अनदेखी नहीं की। यही कारण है कि एक संघर्षशील उत्कृष्ट पत्रकार होने के साथ ही साथ वे विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं और सामाजिक संस्थाओं में अहम् पदों पर रहे तथा इनकी गतिविधियों के लिए समय निकालते रहे। लेकिन ऐसा करते समय उन्होंने पत्रकारिता की न तो कभी अनदेखी की और न ही कभी सिद्धान्तों से कोई समझौता किया। जहां भी वे रहे वहां अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी और ध्येयनिष्ठ पत्रकारिता को नयी ऊंचाइयों पर पहुंचाने का निरन्तर प्रयास किया। एक श्रमजीवी पत्रकार के रुप में उन्होंने पत्रकारिता की शुरुआत की और जीवन पर्यन्त एक श्रमजीवी पत्रकार के रुप में ही अपनी छाप छोड़ी। रायपुर से उन्होंने अपना समाचार पत्र 'अमृतसंदेश' एक अक्टूबर 1984 से प्रारंभ किया, लेकिन उनकी अपनी पहचान एक पत्रकार के रुप में ही रही। 1959 से वे नवभारत से जुड़े और 1984 तक इसमें संपादक रहे। उनके संपादन में नवभारत दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करता रहा और छत्तीसगढ़ इलाके में इस समाचार पत्र की अपनी अलग पहचान बनी और वह यहां का सबसे अधिक प्रभावशाली समाचार पत्र के रुप में स्थापित हुआ। नवभारत पत्र समूह के जितने भी संस्करण हैं उनमें सर्वाधिक प्रसार वाला रायपुर संस्करण ही था, जहां इस समाचार पत्र के बतौर संपादक सर्वेसर्वा वोराजी ही थे। स्व. श्री वोरा आकाशवाणी, हिंदुस्तान टाइम्स और हिंदुस्तान सहित कुछ समाचार पत्रों के संवाददाता भी इस दौरान रहे। चाहे आपातकाल का समय रहा हो या कोई अन्य समय स्व. श्री वोरा ने हमेशा ही सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ता दिखाई एवं निष्पक्ष पत्रकारिता की अलख जगाते रहे।

शेष पेज 07 पर...

राहुल

सीट कव्हर हाऊस

निर्माताः कार सीट कव्हर एवं कार डेकोरेशन

श्रीराम रघुवंशी

:: मोबाइल ::
9425302557

प्लॉट नं. 196, शॉप नं. 30, कामधेनु कॉम्पलेक्स के पीछे, जोन-1, एम. पी. नगर, भोपाल, फोनः 0755-4285551

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से

एकजुट हो शक्ति का अहसास कराये समाज

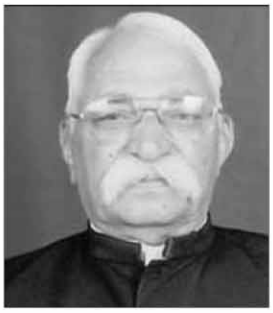

समाज की मजबूती के लिए आपसी एकजुटता नितान्त जरुरी है और एकजुट समाज ही अपनी शक्ति का अहसास करा सकता है। एकजुट समाज ही अपने अधिकारों की असरकारी ढंग से मांग कर सकता है। चुनाव का समय आ रहा है और समाज को एकजुट होकर कांग्रेस-भाजपा सहित अन्य दलों से टिकिट मांगने का हरसंभव प्रयास करना चाहिए। समाज की एकजुटता हमारी प्राथमिकता है और समाज का जो व्यक्ति जिस दल में है उसके पीछे पूरी समाज खड़ी हो ताकि उसका अपने-अपने दल में प्रभाव व महत्व बढ़े।

''जहां सुमति तहं संपत्ति नाना
जहां कुमति तहं विपति निधाना।।''

बंधुओं अभी रायसेन जिले के उदयपुरा के प्रकरण में समाज ने जिस संगठन शक्ति, एकता एवं दृढ़ता का परिचय दिया वह प्रशंसनीय है तथा समाज के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। संगठन तो मात्र मार्गदर्शक की भूमिका में रहता है वास्तविक शक्ति तो समाज में और उसके आत्म-बल में निहित है, जिसका दर्शन हर स्तर पर सभी को हुआ।

उदयपुरा की जिस बेटी ने, जिन परिस्थितियों में अपनी जीवन लीला समाप्त की वह किसी भी सभ्य समाज के लिए शर्म की बात है। किन्तु उसकी चुनौती को उसके असहाय मां-बाप व परिजनों ने स्वीकारा। समाज ने एवं अन्य शुभचिंतकों ने जो संबल दिया वह सराहनीय है। ऐसे समय जिनका सहयोग मिला मैं हृदय से उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। आशा करता हूं भविष्य में आने वाली चुनौतियों का भी अतीत से सबक लेकर समाज और दृढ़ इच्छाशक्ति तथा मजबूत संगठन के बलबूते पर सामना कर अपने स्वाभिमान तथा उच्च आदर्शों का पालन करेगा।

बंधुओं हमारा समाज विशेष रुप से खेतिहर समाज है। अभी-अभी रवी फसल का मौसम गया, खरीफ का आ रहा है। कृपया परिश्रम एवं आधुनिक तकनीक से उन्नत कृषि करें और राष्ट्र की तथा स्वयं की समृद्धि में योगदान करें। अपनी चतुराई से कृषि व्यवसाय को लाभ का व्यवसाय बनाने में योगदान करें। तुलसीदासजी ने भी रामचरित मानस में लिखा है ''कृषि निरावहिं चतुर किसाना।''

अभी समाज में अविवाहित बच्चों के शादी-विवाह के आयोजन चल रहे हैं। मैंने पूर्व में भी कई बार कहा है विनम्र अपील की है कि शादी-समारोहों में ज्यादा दिखावा न करें। दहेज रुपी दानव का प्रदर्शन व प्रलोभनों का सर्वथा त्याग करें। दहेज रुपी कुरीति समाज में जड़ जमा रही है इसे समूल नष्ट करें, अन्यथा भविष्य के लिए यह समाज को बर्बाद करने वाला दानव सिद्ध होगा। विशेषरुप से समाज के शिक्षित एवं दूरदर्शी युवक/युवतियां ऐसे संकल्प लें, क्योंकि वही भविष्य के निर्माता अथवा कर्णधार हैं। पुरातन बुराइयों को छोड़ नई आदर्श परम्पराओं की स्थापना में कृतसंकल्प हो क्रियाकलापों को सुनिश्चित करना है। हमारे क्रियाकलापों से समाज में गलत संदेश न जाये। हमारा जीवन निम्न चौपाई के अनुरुप हो-

''रघुवंशन कर सहज सुभाऊ, मन कुपंथ पग धरई न काऊ।''

यह अति प्रसन्नता की बात है कि अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा की त्रैमासिक पत्रिका रघुकलश इस अंक के साथ अपने प्रकाशन के 17वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। हमारा यह प्रयास रहा है कि रघुकलश के माध्यम से समाज की प्रतिभाओं को आगे लाने का भरपूर प्रयास किया जाए और उन्हें एक ऐसा मंच प्रदान किया जाए जिससे कि वे अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन समूची समाज के सामने कर सकें। रघुकलश केवल एक सामाजिक पत्रिका मात्र नहीं अपितु एक सामाजिक आंदोलन है, जिसे सार्थक करने के लिए सभी सामाजिक बंधुओं को तन-मन-धन से सहयोग करना चाहिए।

रघुकलश में सामाजिक प्रतिभाओं का परिचय, उनकी रचनाएं और विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय नि:शुल्क प्रकाशित किया जाता है। सामाजिक बंधुओं से अनुरोध है कि वे अधिक से अधिक प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें।

हजारीलाल रघुवंशी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा

मानस पंचामृत

रमेश रंजन त्रिपाठी

भगवान की पूजा में पंचामृत का विशेष महत्व है। सगुणोपासक भक्त षोडशोपचार पूजा में दूध, दही, घी, शहद और शर्करा के मिश्रण से निर्मित पंचामृत से अपने आराध्य को स्नान कराते हुए अतीव आनंद, संतोष एवं शांति का अनुभव करते हैं। इस प्रसाद स्वरूप पंचामृत का पान कर स्वयं को धन्य मानते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस को भी दिव्य पंचामृत से अभिसिक्त किया है जिसका पान कर हर मानस प्रेमी कृतकृत्य हो जाता है।

अमृत के पर्यायवाची जैसे अमिय, सुधा, पियूष इत्यादि का प्रयोग भी गोस्वामी जी ने अनेक स्थानों पर किया है परंतु हम यहाँ उन पाँच प्रसंगों का अलौकिक आनंद प्राप्त करेंगे जहाँ पर विशेष रूप से 'अमृत' शब्द का उपयोग किया गया है। अमृत अर्थात् अमरता जहाँ मृत्यु न हो। अमृतपान कभी निष्फल नहीं जाता है। अपना प्रभाव अवश्य दिखाता है। श्रीरामचरितमानस के पंचामृत का सेवन भी भक्तों के हृदय में श्रीराम प्रभु की अनन्य भक्ति को सदा के लिए अमर कर देता है।

श्रीराम जी की कथा कामधेनु के समान समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाली है-

मनकामना सिद्धि नर पावा, जे यह कथा कपट तजि गावा।
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं, ते गोपद इव भवनिधि तरहीं।

गोस्वामी जी ने मानस को सरोवर की उपमा दी है जिससे श्रीराम जी के यशरूपी निर्मल जल वाली सरयू नाम की सरिता निकल कर श्रीराम की भक्ति रूपी गंगा जी से जाकर मिल जाती है। तुलसी बाबा ने रामकथा को मंदाकिनी भी कहा है-

रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु,
तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु।

श्रीरामचंद्र भगवान की कृपा प्राप्ति का सबसे सरल उपाय मानस का नित्य निरंतर पठन-पाठन है। इन्हीं वाचन, श्रवण एवं सरितप्रवाह के प्रतीकों के साथ मानस के प्रसंगों में प्रयुक्त कृपामृत, वचनामृत, सरितामृत एवं श्रवणामृत का अध्ययन करने से संपूर्ण संदर्भ स्पष्ट हो जाता है।

गोस्वामी जी ने भक्तों को मनु-शतरूपा के प्रसंग में अमृत को चखने का दुर्लभ अवसर दिया है। मनुष्यों की सृष्टि जिनसे हुई वे स्वायम्भुव मनु और उनकी धर्मपत्नी शतरूपा अपने पुत्रों को राज्य सौंपकर वन को चले गए। वे नैमिषारण्य तीर्थ की यात्रा करते हुए गोमती के किनारे पहुँचे। उन्होंने 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' का जप करते हुए घोर तपस्या की। छः हजार वर्षों तक वे जल के सहारे रहे, फिर सात हजार साल तक केवल वायु का आसरा लिया और अंत में दस हजार वर्षों तक वायु का आधार भी छोड़कर एक पैर पर खड़े रहे। इस महान तप को देखकर ब्रह्मा, विष्णु, महेश कई बार वर देने के लिए उनके पास आए परंतु वे टस से मस नहीं हुए। तब सर्वज्ञ प्रभु श्रीराम ने उन्हें अपना निज दास जाना और परम गंभीर 'कृपामृत' से सनी हुई आकाशवाणी हुई कि 'वर माँगो'। गोस्वामी जी परमपिता परमात्मा की वाणी को 'कृपामृत' कहते हैं।

प्रभु सर्बग्य दास निज जानी, गति अनन्य तापस नृप रानी।
मागु मागु बरु भै नभ बानी, परम गभीर कृपामृत सानी।

मनु और शतरूपा ने पहले भगवान के दर्शन किए फिर उनके

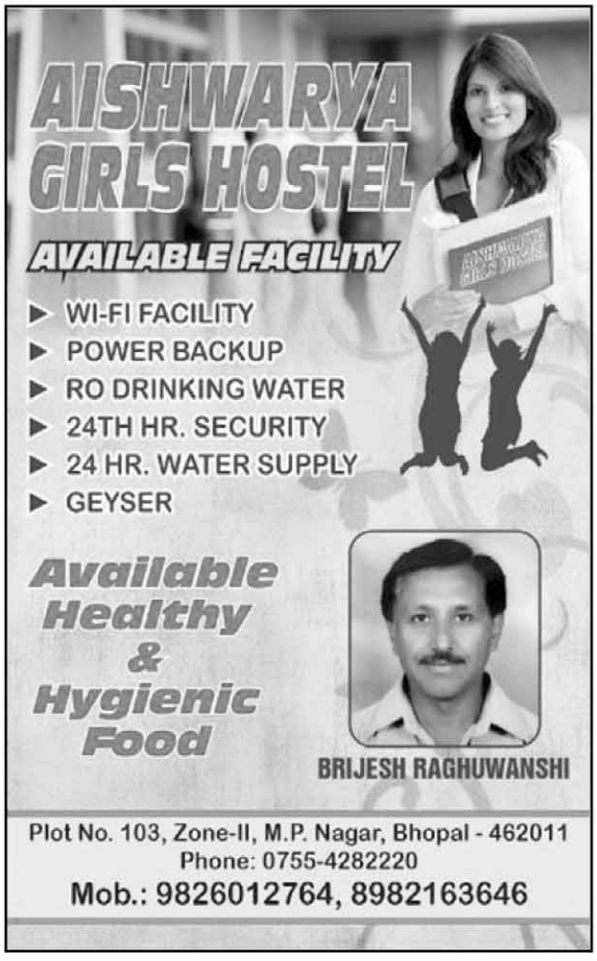

समान सुत प्राप्ति का वरदान माँगा। तब परमेश्वर ने कहा कि वे अपने जैसा कोई कहाँ ढूँढेंगे इसलिए स्वयं उनके पुत्र बनकर आएँगे और कालांतर में मनु-शतरूपा ने अयोध्या नरेश दशरथ और रानी कौशल्या के रूप में जन्म लिया तब प्रभु श्रीराम उनके पुत्र हुए। क्या किसी को इससे बड़ी कृपा प्राप्त हो सकती है?

अब आते हैं पतित पावन, जगदाधार, अखिल लोक के विश्राम प्रभु श्रीराम के प्राकट्योत्सव वाले प्रसंग पर। चैत्रमास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को दोपहर के समय जब न बहुत शीत थी न बहुत धूप तब अभिजित मुहूर्त में योग, लग्न, ग्रह, वार और तिथि सभी अनुकूल हो गए, जड़ और चेतन हर्ष से भर गए क्योंकि दीनों पर दया करने वाले श्रीरामचंद्र प्रकट होने वाले थे।

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल,
चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल।
नौमी तिथि मधु मास पुनीता,
सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता।
मध्यदिवस अति सीत न घामा, पावन काल लोक बिश्रामा।

गोस्वामी जी ने इस पावन प्रसंग का अत्यंत मनोरम वर्णन किया है। आखिर हो भी क्यों न ? जगनिवास प्रभु के धरा पर दिव्य अवतरण का दुर्लभ अवसर जो आ गया है ! तुलसी बाबा कहते हैं-

सीतल मंद सुरभि बह बाऊ, हरषित सुर संतन मन चाऊ।
बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा,
स्रवहिं सकल सरितामृतधारा।

शीतल, मन्द और सुगंधित वायु बह रही है। देवता हर्षित हैं और संतों के मन में बड़ा चाव है। वन फूले हुए हैं, पर्वतों के समूह मणियों से जगमगा रहे हैं और सभी नदियों में अमृत की धारा बह रही है। गोस्वामी जी ने जो पहले लिखा है कि 'चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल' वह यहाँ स्पष्ट हो जाता है क्योंकि अचल वन, पर्वत तथा चर सुर और संतों के हृदय में श्रीरामजन्म के सुख का मूल हर्ष छा गया। पूरी सृष्टि आनंद से भर गई।

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार,
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार।

अर्थात् ब्राह्मण, गौ, देवता और संतों के लिए भगवान ने मानवरूप में अवतार लिया। वे माया और उसके गुणों तथा इन्द्रियों से परे हैं। उनका दिव्य शरीर उनकी इच्छा से ही बना है, किसी भौतिक पदार्थों से नहीं।

प्रभु राम का प्राकट्य पूरी सृष्टि के लिए अलौकिक घटना है। इसीलिए अपने भगवान के स्वागत में संपूर्ण चराचर जगत ने अपना सर्वोत्कृष्ट और सर्वोत्तम स्वरूप धारण कर लिया। यही भाव तुलसीदास जी ने 'सरितामृत' धारा से प्रकट किए हैं। हम सभी इस अमृत के पान में पीछे क्यों रहें ?

गोस्वामी जी ने श्रीरामचरितमानस में अत्यंत विशिष्ट अवसरों पर अमृत शब्द का उपयोग किया है। ऐसा ही प्रसंग सुंदरकांड में आता है। रावण माता सीता का अपहरण कर लंकापुरी में ले आया है। उसने जानकी जी को अशोक वाटिका में रखा है। वह सीता जी को डरा-धमकाकर अपनी पत्नी बन जाने के लिए राजी करने का प्रयास करता है। इधर, बजरंगबली ने प्रभु श्रीराम की मित्रता सुग्रीव से कराई, रघुनन्दन ने बालि का वध कर सुग्रीव को किष्किंधा का राजा बना दिया। सुग्रीव ने माता सीता की खोज में अपनी पूरी वानर सेना को चारों दिशाओं में भेजा है। भगवत्कृपा हनुमंत लाल को प्राप्त है इसीलिए राघवेंद्र ने अपनी मुद्रिका उन्हें सौंपी। पवनपुत्र सीता मैया को खोजते हुए अशोक वाटिका पहुँचकर उसी अशोक वृक्ष के पत्तों के पीछे छिप जाते हैं जिसके नीचे वैदेही बैठी हैं। रावण की प्रताड़ना से तंग आकर वे प्राणोत्सर्ग का चिंतन करती हैं तभी बजरंगबली रामजी की अँगूठी नीचे गिरा देते हैं। जानकी जी मुद्रिका को पहचान लेती हैं और अनेक शंका कुशंकाओं से घिर जाती हैं। उसी समय हनुमान जी छिपे हुए रामकथा का गान करने लगते हैं जिसे सुनकर सीता माता का सारा दुःख दूर हो जाता है और वे कह उठती हैं-

श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई, कही सो प्रगट होति किन भाई।

जिसने कानों के लिए अमृतरूप यह सुन्दर कथा कही, वह हे भाई ! प्रकट क्यों नहीं होता ?

यहाँ विशेष बात यह है कि रामकथा का गान, रघुनन्दन के भरत समान प्रिय, बजरंगबली कर रहे हैं और श्रोता करुणानिधान प्रभु श्रीराम की 'अतिशय प्रिय' माता जानकी हैं। कैसा अलौकिक समय रहा होगा जब परमानंददायिनी यह रामकथा सुनाई जा रही होगी ! सचमुच यह सुंदर कथा न केवल माता सीता के कानों के लिए अपितु हम सभी के लिए अमृत है।

सुंदरकांड में ही श्रवणामृत की पावन वर्षा विभीषण के साथ भी होती है। विभीषण अपने भ्राता रावण को समझाने का प्रयास करता है कि सीता जी को श्रीराम को लौटाकर उनसे क्षमायाचना कर लें, इसी में सभी की भलाई है। इस बात से कुपित होकर रावण ने उसे लात मारकर अपमानित किया और खूब खरी खोटी सुनाई। तभी विभीषण निश्चय कर लेता है कि वह प्रभु श्रीराम की शरण में जाएगा। जब विभीषण राघवेंद्र की शरण में आता है तब सुग्रीव सलाह देते हैं कि नीति के अनुसार शत्रु के भाई को बंदी बना लेना चाहिए। परंतु श्रीराम अपनी शरणागत वत्सलता की याद दिलाते हुए विभीषण को अपना लेते हैं। यहाँ, मानसकार ने श्रीरामभद्र के मुखारविंद से विभीषण को जो उपदेश दिलाया है वह भगवान के स्वभाव को समझने का सुंदर माध्यम है। श्रीराम स्वयं अपने स्वभाव का वर्णन करते हैं-

सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ, जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ।
जौं नर होइ चराचर द्रोही, आवै सभय सरन तकि मोही।
तजि मद मोह कपट छल नाना, करउँ सद्य तेहि साधु समाना।

जननी जनक बंधु सुत दारा, तनु धनु भवन सुहृद परिवारा।
सब कै ममता ताग बटोरी, मम पद मनहि बाँध बरि डोरी।
समदरसी इच्छा कछु नाहीं, हरष सोक भय नहिं मन माहीं।
अस सज्जन मम उर बस कैसे, लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसे।
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरे, धरउँ देह नहिं आन निहोरें।
सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम,
ते नर प्रान समान मम जिन्ह के द्विज पद प्रेम।
सुनु लंकेस सकल गुन तोरे, ताते तुम्ह अतिशय प्रिय मोरे।
सुनत विभीषण प्रभु कै बानी, नहिं अघात श्रवनामृत जानी।

हे सखा ! सुनो, मैं तुम्हें अपना स्वभाव बतलाता हूँ जिसे काकभुशुण्डि, शंकर जी और पार्वती जी भी जानती हैं। कोई मनुष्य भले ही चर अचर संपूर्ण सृष्टि का दोषी हो, यदि भयभीत होकर मेरी शरण में आ जाए और मद, मोह और अनेक प्रकार के छल कपट त्याग दे तो मैं उसे अतिशीघ्र साधु के समान कर देता हूँ। माता, पिता, भाई, पुत्र, स्त्री, शरीर, धन, घर, मित्र और परिवार सभी के ममतारूपी धागों को एकसाथ बटकर डोरी बना लेने और इस डोरी से अपने मन को मेरे चरणों में बाँध देने वाले ऐसे सज्जन जो समदर्शी और इच्छारहित हैं, जिनके मन में हर्ष, शोक और भय नहीं है, मेरे मन में इस प्रकार बसते हैं जैसे लोभी के मन में धन बसता है। तुम सरीखे संत ही मुझे प्रिय हैं और किसी अन्य के कृतज्ञतावश मैं देह धारण नहीं करता यानी तुम जैसे संत पुरुषों के लिए ही अवतार लेता हूँ। श्रीराम और भी समझाते हैं कि जो सगुण भगवान के उपासक हैं, परोपकार में लगे रहते हैं, नीति और नियमों में दृढ़ हैं और जो द्विज का सम्मान करते हैं, वे मनुष्य मेरे प्राणों के समान हैं। हे लंकापति ! सुनो, तुम्हारे अंदर ये सभी गुण हैं इससे तुम मुझे अत्यंत प्रिय हो। प्रभु श्रीराम की कानों के लिए अमृत समान वाणी सुनकर विभीषण अघाते नहीं हैं। और क्यों न हो, स्वयं परमपिता परमात्मा उपदेश दे रहे हों और श्रोता बने विभीषण के संत गुणों की व्याख्या करते हुए उन्हें अपना सबसे प्रिय घोषित कर प्रशंसा कर रहे हों तब ऐसी अमृतवाणी से कौन नहीं अघाएगा?

श्रीरामचरितमानस के उत्तरकांड में काकभुशुण्डि एवं गरुड़ का अत्यंत सारगर्भित संवाद है। गोस्वामी जी की मानस में श्रीरामकथा के चार वक्ता और चार श्रोता हैं। प्रथम हैं याज्ञवल्क्य एवं भारद्वाज मुनि, दूसरे हैं भगवान शंकर एवं माता पार्वती, तीसरे हैं काकभुशुण्डि और गरुड़ तथा चौथे वक्ता स्वयं गोस्वामी तुलसीदास जी हैं और श्रोता हम सब। राम-रावण युद्ध में जब राघवेंद्र को मेघनाद ने नागपाश में बाँध दिया था तब नारद जी ने गरुड़ को भेजकर उन्हें सर्पों के बंधन से मुक्ति दिलाई थी। तभी भगवान के वाहन गरुड़ मोहग्रस्त हो गए कि श्रीराम यदि परमेश्वर के अवतार हैं तो उन्हें नागों के बंधन से छूटने के लिए मेरी आवश्यकता क्यों हुई? क्या भगवान को भी किसी बंधन में बाँधा जा सकता है? जिनका नाम जपकर मनुष्य संसार के बंधन से छूट जाते हैं उन्हीं श्रीराम को एक तुच्छ राक्षस ने नागपाश से बाँध लिया ?

भव बंधन ते छूटहिं नर जपि जा कर नाम,
खर्ब निसाचर बाँधेउ नागपास सोइ राम।

मन में शंका आते ही माया ने उन्हें अपने वश में कर लिया और वे व्याकुलता से भर गए। पक्षिराज ने अपनी व्यथा नारद जी को सुनाई। देवर्षि ने उन्हें ब्रह्मा जी के पास भेजा। ब्रह्मा जी ने गरुड़ को शिव जी के पास भेज दिया। शंकर जी ने खगेश को अपने सन्देह मिटाने के लिए बहुत काल तक सत्संग करने की सलाह दी और रामकथा सुनने के लिए काकभुशुण्डि के आश्रम यह समझाते हुए भेजा कि-

बिनु सतसंग न हरिकथा तेहि बिनु मोह न भाग,
मोह गएँ बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग।

सत्संग के बिना हरि की कथा सुनने को नहीं मिलती, उसके बिना मोह नहीं भागता और मोह के गए बिना भगवान राम के चरणों में अचल प्रेम नहीं होता।

गरुड़ काकभुशुण्डि के आश्रम में पहुँचकर रामकथा सुनते हैं। उनका मोह, सन्देह दूर होता है। तब गरुड़ जी के पूछने पर काकभुशुण्डि उन्हें अपने बारे में बताते हैं कि किस प्रकार प्रभु श्रीराम से उन्हें आशीर्वाद और वरदान प्राप्त हुआ।

काकभुशुण्डि कहते हैं कि हे गरुड़, जब जब राम जी मनुष्य रूप धारण करते हैं तब तब मैं अयोध्यापुरी जाकर उनकी बाल लीला देखकर हर्षित होता हूँ। छोटे से कौए का शरीर धरकर भगवान के साथ-साथ फिरता हुआ उनके अनेक बालचरित्रों का आनंद लेता हूँ। रामलला अपनी परछाईं देखकर नाचने लगते हैं। किलकारी मारते हुए मुझे पकड़ने दौड़ते हैं। मैं भागने लगता हूँ तो पूआ दिखलाते हैं। मेरे निकट आने पर हँसते हैं, दूर जाने पर रोने लगते हैं। मैं उनके चरण स्पर्श करना चाहता हूँ तो मेरी ओर मुड़ मुड़ कर देखते हुए भाग जाते हैं। साधारण बच्चों जैसे क्रियाकलाप देखकर मैं मोह में पड़ गया कि सच्चिदानंद भगवान यह कौन सी लीला कर रहे हैं ? मन में इतनी शंका होते ही प्रभु प्रेरित माया ने मुझे घेर लिया। भ्रम में चकित देख श्रीराम प्रभु मुझे पकड़ने दौड़े। तब मैं भाग चला परंतु राघव की भुजा दो अंगुल की दूरी पर मेरे पीछे लगी रही। हे खगराज, मैं ब्रह्मलोक गया, सप्तावरण भेदकर जहाँ तक मेरी गति थी वहाँ तक गया परंतु रामजी की बाँह मेरे पीछे ही लगी रही। मैंने भयभीत होकर आँखें मूँद लीं, फिर जब आँखें खोलीं तो मैं अवधपुरी भगवान के सामने था। मुझे देखकर रामजी मुस्कुराये और बिहँसते ही मैं उनके मुख में चला गया।

काकभुशुण्डि कहते हैं कि हे पक्षिराज, मैंने राघवेंद्र के पेट में अनेक ब्रह्मांडों के समूह देखे, उनमें एक से बढ़कर एक रचना वाले अनेक लोक थे। मैंने करोड़ों ब्रह्मा, शिव, सूर्य, चन्द्रमा, तारागण, अनगिनत लोकपाल, यम, काल, विशाल पर्वत, भूमि, असंख्य समुद्र, नदी, तालाब, वन, सृष्टि देखीं। देवता, मुनि, सिद्ध, नाग, मनुष्य, किन्नर, चारों प्रकार के जड़ और चेतन जीव देखे। जो कभी न देखा था, न सुना था, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी

वही अद्भुत सृष्टि मैंने देखी। मैं एक एक ब्रह्मांड में सौ सौ वर्ष रहा। अनेक ब्रह्मांडों में घूमा। मैंने प्रत्येक लोक में भिन्न भिन्न ब्रह्मा, विष्णु, शिव, मनु, दिक्पाल, मनुष्य, गंधर्व, भूत, वैताल, किन्नर, राक्षस, पशु, पक्षी, सर्प, नाना जाति के देवता एवं दैत्यगण देखे। सभी जीव, अनेक पृथ्वी, नदी, समुद्र, पर्वत दूसरे ही प्रकार की थीं। भिन्न अयोध्या, अलग सरयू, भिन्न दशरथ, कौशल्या, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, देखे। अलग अलग ब्रह्मांडों में रामावतार और उनकी बाल लीलाएं देखीं। मैं असंख्य ब्रह्मांडों में घूमता फिरा परंतु प्रभु श्रीरामचंद्र को मैंने दूसरी तरह का नहीं देखा। मैंने भुवन-भुवन में सर्वत्र वही शिशुपन, वही शोभा और वही कृपालु श्रीरघुनाथ देखे। अनेक ब्रह्मांडों में भटकते मुझे एक सौ कल्प बीत गए। मैं अपने आश्रम में आ गया। फिर अपने प्रभु श्रीराम के प्रकट होने पर उनके जन्मोत्सव को देखने अवधपुरी आ गया। वहाँ मैंने अपने प्रभु की वही बाललीला देखी जो मैं पहले बता चुका हूँ। मैंने दो घड़ी में सब देख डाला। मेरी बुद्धि मोहरूपी कीचड़ से सनी हुई थी। मुझे व्याकुल देखकर रामजी हँसे। उनके हँसते ही मैं मुँह से बाहर आ गया। राघवेंद्र मेरे साथ वही लड़कपन करने लगे। इस अद्भुत लीला को देख मैं मोहग्रस्त हो गया। मैं करोड़ों प्रकार से मन को समझाता था लेकिन शांति नहीं मिल रही थी। सब कुछ इतना आश्चर्यजनक देखने के बाद मैं अपनी सुध भूलकर पुकार उठा कि हे आर्तजनों के रक्षक ! मेरी रक्षा करिए, रक्षा करिए। प्रभु ने मुझे प्रेम विह्वल देखकर माया के प्रभाव को रोक लिया और मेरे सिर पर अपने कर कमल फेरकर सभी दुखों को हर लिया। प्रभु की भक्तवत्सलता देख मैंने अत्यंत प्रेमपूर्वक उनकी अनेक प्रकार से विनती की। तब राम प्रभु ने मुझसे कहा कि हे काकभुशुण्डि ! तू मुझे अत्यन्त प्रसन्न जानकर वर माँग। अणिमा आदि अष्ट सिद्धियाँ, ऋद्धियां, मोक्ष, ज्ञान, विवेक, वैराग्य, तत्त्वज्ञान, समस्त गुण जो मन भावे, माँग ले ! तब मैंने सोचा कि भगवान ने सबकुछ देने की बात कही परंतु अपनी भक्ति देने की बात नहीं की। भक्ति के बिना सभी गुण वैसे ही हैं जैसे नमक के बिना भोजन। तब मैंने अपने प्रभु से उनकी अविरल और विशुद्ध भक्ति का वरदान माँगा। श्रीरामचंद्र मेरी चतुराई से अत्यन्त प्रसन्न हुए और 'एवमस्तु' कहकर बोले- हे पक्षी ! मेरी कृपा से समस्त शुभ गुण तेरे हृदय में बसेंगे। भक्ति, ज्ञान, विज्ञान, वैराग्य, योग, मेरी लीलाएँ और उनके रहस्य तथा विभाग सबके भेद को तू मेरी कृपा से जान जाएगा। माया के भ्रम तुझे नहीं व्यापेंगे।

काकभुशुण्डि आगे बताते हैं कि उन पर प्रसन्न होकर रघुनाथ ने 'निज सिद्धांत' सुनाया। श्रीराम बोले-

मम माया संभव संसारा, जीव चराचर बिबिध प्रकारा।
सब मम प्रिय सब मम उपजाए,
सब ते अधिक मनुज मोहि भाए।
तिन्ह महँ प्रिय बिरक्त पुनि ज्ञानी,
ग्यानिहु ते अति प्रिय बिग्यानी।
तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा,
जेहि गति मोरि न दूसरि आसा।
पुनि पुनि सत्य कहउँ तोहि पाहीं,
मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं।
भगति हीन बिरंचि किन होई, सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई।
भगतिवंत अति नीचउ प्रानी, मोहि प्रानप्रिय असि मम बानी।
सुचि सुसील सेवक सुमति प्रिय कहु काहि न लाग,
श्रुति पुरान कह नीति असि सावधान सुनु काग।
एक पिता के विपुल कुमारा, होंहि पृथक गुन सील अचारा।
कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता, कोउ धनवंत सूर कोउ दाता।
कोउ सर्बग्य धर्मरत कोई, सब पर पितहि प्रीति सम होई।
कोउ पितु भगत बचन मन कर्मा, सपनेहुँ जान न दूसर धर्मा।
सो सुत प्रिय पितु प्रान समाना, जद्यपि सो सब भाँति अयाना।
एहि बिधि जीव चराचर जेते, त्रिजग देव नर असुर समेते।
अखिल बिस्व यह मोर उपाया, सब पर मोहि बराबरि दाया।
तिन्ह महँ जो परिहरि मद माया,
भजै मोहि मन बच अरु काया।
पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ,
सर्ब भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ।
सत्य कहउँ खग तोहि सुचि सेवक मम प्रानप्रिय,
अस बिचारि भजु मोहि परिहरि आस भरोस सब।
कबहूँ काल न ब्यापिहि तोही, सुमिरेसु भजेसु निरंतर मोही।
प्रभु बचनामृत सुनि न अघाऊँ,
तनु पुलकित मन अति हरषाऊँ।

अर्थात् (भगवान राम कहते हैं कि) सारा संसार मेरी माया से उत्पन्न है, इसके सभी चराचर जीव मुझे प्रिय हैं क्योंकि वे मेरे उत्पन्न किए हुए हैं। परंतु मनुष्य मुझे सबसे अधिक अच्छे लगते हैं। मनुष्यों में भी द्विज, द्विजों में भी वेदों को धारण करने वाले, उनमें भी वेदोक्त धर्म पर चलने वाले, उनमें भी विरक्त मुझे प्रिय हैं। विरक्तों में ज्ञानी और ज्ञानियों में विज्ञानी, विज्ञानियों में भी मुझे दास प्रिय हैं जिन्हें मेरे अतिरिक्त कोई अन्य आसरा या आशा नहीं है। मैं बार बार कहता हूँ कि मुझे अपने सेवक के समान और कोई प्रिय नहीं है। भक्तिहीन ब्रह्मा मुझे सब जीवों के समान प्रिय है परंतु भक्तिमान अत्यन्त नीच प्राणी भी मुझे प्राणों के समान प्रिय है, यह मेरी घोषणा है। पवित्र, सुशील और सुन्दर बुद्धिवाला सेवक किसे प्यारा नहीं लगता ?

फिर रामप्रभु अपनी बात उदाहरण देकर समझाते हैं। वे कहते हैं कि एक पिता के पृथक-पृथक गुण, स्वभाव और आचरण वाले बहुत से पुत्र होते हैं। कोई पण्डित, कोई तपस्वी, कोई ज्ञानी, कोई धनी, कोई शूरवीर, कोई दानी, कोई सर्वज्ञ और कोई धर्मपरायण होता है। पिता इन सभी से समान प्रेम करते हैं। परंतु इनमें से कोई

यदि मन, वचन और कर्म से पिता का ही भक्त होता है, स्वप्न में भी दूसरा धर्म नहीं जानता, वह पुत्र पिता को प्राणों के समान प्रिय होता है चाहे वह सब प्रकार से मूर्ख ही क्यों न हो ! इसी प्रकार पशु-पक्षी, देव, मनुष्य और असुरों समेत जितने भी चेतन और जड़ जीव हैं उनसे भरा हुआ सम्पूर्ण विश्व मेरा ही पैदा किया हुआ है अतः सब पर मेरी बराबर दया है। इनमें से मद और माया छोड़कर मन, वचन और शरीर से जो मुझे भजता है, वह पुरुष हो, नपुंसक हो, स्त्री हो अथवा चर अचर कोई भी जीव हो, कपट छोड़कर जो सर्वभाव से मुझे भजता है वही मुझे परमप्रिय है। हे पक्षी ! मैं सत्य कहता हूँ कि पवित्र (अनन्य एवं निष्काम) सेवक मुझे प्राणों के समान प्यारा है। ऐसा विचार कर सब आशा-भरोसा छोड़कर मुझे भज। तुझे कभी काल नहीं व्यापेगा। निरंतर मेरा स्मरण एवं भजन करते रहना। प्रभु के 'वचनामृत' सुनकर काकभुशुण्डि तृप्त नहीं होते थे। उनका शरीर पुलकित था और मन में बहुत हर्षित हो रहे थे।

अवश्य ही यह दुर्लभ अवसर था जब प्रभु श्रीराम अपने परमप्रिय सेवक काकभुशुण्डि को 'निज सिद्धांत' अपने मुखारविंद से सुना रहे थे। रामजी के इन्हीं वचनों को गोस्वामी जी ने 'वचनामृत' की संज्ञा दी है। काकभुशुण्डि कहते हैं कि वचनामृत पान करने का सुख मन और कान ही जानते हैं। जीभ से उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। प्रभु की शोभा का वह सुख नेत्र ही जानते हैं पर वे कह कैसे सकते हैं क्योंकि उनके वाणी तो है ही नहीं!

सो सुख जानइ मन अरु काना,
नहिं रसना पहिं जाइ बखाना।
प्रभु सोभा सुख जानहिं नयना,
कहि किमि सकहिं तिन्हहिं नहिं बयना।

गोस्वामी जी ने रामकथा में अनेक प्रतीकों के माध्यम से जीवन का भरपूर आनंद लेने के लिए ऐसी सुंदर आचार संहिता तैयार की है जिसका पालन कर हम इस लोक के साथ परलोक को भी सँवार सकते हैं। हम सब तुलसी बाबा द्वारा मानवमात्र के कल्याण के लिए श्रीरामचरितमानस के अभिषेक में अनेक दिव्य पदार्थों के साथ उपयोग में लाए गए पंचामृत का पान करें और भगवान श्रीराम के चरणों में अपनी भक्ति को अमर बनाएँ।

--------■ ■--------

...पेज 01 का शेष

संजीदा पत्रकारिता के प्रतीक ...

पत्रकारिता के वे एक ऐसे पुरोधा थे जो अनेक पत्रकारों के लिए आदर्श पुरुष रहे और उनके मार्गदर्शन में अनेक पत्रकारों ने पत्रकारिता के क्षेत्र में अहम् मुकाम हासिल किया। पत्रकारिता जगत में स्व. श्री वोरा एक ऐसा नाम है जिसे कभी अपनी पहचान बताने की जरुरत नहीं पड़ी बल्कि अपने कार्यो और लेखन तथा सिद्धान्तपरक पत्रकारिता करने के कारण उनकी अपनी समाज में विशिष्ट पहचान और हैसियत बनी। 12 मार्च 1932 को स्व. मोहनलाल वोरा के परिवार में जन्मे स्व. श्री गोविंदलाल वोरा कांग्रेस के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और उत्तरप्रदेश के पूर्व राज्यपाल मोतीलाल वोरा के अनुज थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में संवाददाता के पद से अपनी पत्रकारिता का सफर आरंभ करने वाले स्व. वोरा निरन्तर आगे बढ़ते हुए नवभारत के संपादक बने और बाद में नवभारत पत्र समूह के अंग्रेजी समाचार पत्र एमपी क्रॉनिकल के भी 1984 तक संपादक रहे। एक अक्टूबर 1984 को उन्होंने अमृतसंदेश का प्रकाशन प्रारंभ किया और जीवन पर्यन्त इसके संपादक रहे। भोपाल से प्रकाशित साप्ताहिक आमंत्रण के भी वे जीवन पर्यन्त प्रधान संपादक रहे। अपने पत्रकारिता जीवन में पत्रकारों के हित संरक्षण से जुड़ी संस्थाओं व संगठनों में उन्होंने महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वहन किया और मध्यप्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ भोपाल के उपाध्यक्ष भी रहे। स्व. श्री वोरा रायपुर में प्रेस क्लब की स्थापना के दौर में उसके संस्थापक सदस्य के रुप में सक्रिय रहे और प्रेस क्लब के अध्यक्ष भी बने। वे अखिल भारतीय समाचार पत्र संपादक कार्फ्रेंस नई दिल्ली तथा अखिल भारतीय भाषाई समाचार पत्र एसोसिएशन मुम्बई के उपाध्यक्ष रहे एवं इंडियन न्यूज पेपर सोसायटी के सदस्य भी रहे। विदेश यात्राओं के क्रम में एक पत्रकार के रुप में अध्ययन यात्रा के लिए उन्होंने अनेक देशों का भ्रमण किया और अंतर्राष्ट्रीय रोटरी में मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ तथा उड़ीसा के डिस्ट्रिक्ट गर्वनर रहते हुए नये कीर्तिमान स्थापित किए। पत्रकारिता और सामाजिक क्षेत्र के साथ ही साथ साहित्य के क्षेत्र में भी उनकी अपनी अलग पहचान थी और वे छत्तीसगढ़ हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष भी रहे। समाचार लेखन के साथ ही उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में भी अपनी दखल रखी और अनेक एकांकी लेख आदि का प्रकाशन उस समय की लब्ध-प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में हुआ जिनमें सरस्वती भी शामिल थी। स्व. श्री वोरा राजनीतिशास्त्र में स्नातकोत्तर थे। वे रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर में पत्रकारिता विभाग के संस्थापक विभागाध्यक्ष रहे और शिक्षण कार्य भी किया। स्व. श्री वोरा ने 13 मई 2018 को नई दिल्ली के फोर्टिस अस्पताल में अंतिम सांस ली। स्व. वोरा एक सच्चे कर्मयोगी, साहसी, निष्ठावान व्यक्तित्व के ऐसे धनी थे जिनमें सबके प्रति स्नेह का भाव कूट-कूट कर भरा था। वे हमेशा ही पत्रकारों के लिए आदर्श बने रहेंगे और नई पीढ़ी के पत्रकारों के लिए संजीदा पत्रकारिता के प्रतीक बनकर उनके दिलों में बसे रहेंगे। स्व. श्री वोरा को अमृतसंदेश परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित है। वे हमेशा हमारे दिलों में एक दैदीप्यमान प्रकाश स्तम्भ की तरह प्रेरणादायी बने रहेंगे।

-अरुण पटेल

आध्यात्म रामायण में अग्नि प्रसंग

मनोज कुमार श्रीवास्तव

आध्यात्म रामायण में अग्नि प्रसंग को छाया-सीता के माध्यम से समझाने की कोशिश की गयी है। न सिर्फ यह अग्नि-प्रसंग बल्कि अरण्यकांड का हिरण-प्रसंग भी इसी के जरिए उचित सिद्ध किया गया है। सीता की यह जिद क्यों थी कि स्वर्ण-मृग को पकड़ा जाए? सीता कैसे इतनी अज्ञानी हो सकती थी? तो अध्यात्मक रामायण में इसे राम के द्वारा रचित प्रसंग बतलाया गया है। वहां राम रावण की योजना से पूर्णत: परिचित प्रतीत होते हैं और सीता को कुटी के बाहर अपनी छाया रखने को कहते हैं : वे सीता को अग्नि के भीतर अदृश्य होकर एक साल तक निवास करने की आज्ञा देते हैं। सीता एक माया-सीता का सृजन करती हैं और उसे कुटी के बाहर बैठाकर स्वयं अग्नि में प्रवेश कर जाती हैं। इस प्रकार माया सीता ने मायामृग को देखा।

लेकिन अध्यात्म रामायण की यह चेष्टा आध्यात्मिक नहीं लगती। अवतार तो फिर भी लीला है। लेकिन यहां तो सारी चीजें फिर एक तरह के प्रिटेन्शन में बदल जाती हैं। राम तब क्या झूठ-मूठ में ही विलाप कर रहे थे? वो रावण के साथ उनकी लड़ाई भी झूठी थी? यानी सिर्फ लक्ष्मण का शोक अनुभूति था। राम का अभिनय मात्र? यदि रावण भी मायावी है तो राम भी मायावी हैं। किन्तु सच्चाई क्या है? राम रावण के बराबर नहीं हैं। राम सूर्य हैं और रावण खद्योत। लेकिन अध्यात्म रामायण यह भी कहती है कि युद्धोपरान्त राम स्वयं अपनी रची इस माया को भूल जाते हैं और देवता राम को उनके देवत्व की और अग्नि इस माया सीता की स्मृति दिलाते हैं। तुलसी अध्यात्म रामायण के अध्यात्म का बहुत प्रतीकात्मक उपयोग करते हैं। किन्तु वे उसका शास्त्रीय नहीं, पोएटिक प्रयोग करते हैं : सीता की पवित्रता में अग्निप्रियता है। जी.के. चेस्टरटन कहते हैं : Chastity does not mean abstention from sexual wrong, it means something flaming, like Joan of Arc. वाल्मीकि इसी दीप्तिमती flaming सीता की बात करते हैं। इसलिए वे सीता को धूम-3 के नायक की तरह ''बॉडी डबल'' का लाभ मिलना बिलकुल नहीं बताते। उनका विवरण यथातथ्य है, चाहे उसके जो मतलब निकाले जायें। सबसे पहले कूर्म पुराण ने सीता के साथ-साथ माया सीता की चर्चा की। ब्रह्मवैवर्त पुराण ने भी। लेकिन ब्रह्मांड पुराण का अंग मानी जाने वाली अध्यात्म रामायण में माया सीता बहुत उभर कर आयी। देवी भागवत पुराण और अदभुत रामायण में भी यह बात वर्णित हुई। बलराम दास जैसे उड़िया कवि की ''जगमोहन रामायण'' और उपेन्द्र की ''वैदेहिया विलासा'' में भी माया सीता की चर्चा है। कूर्म पुराण में अग्नि माया सीता का सृजन करती है और अग्नि ही असल सीता को लौटाती है। नेपाली भानुभक्त आचार्य की रामायण में राम स्वयं माया सीता का सृजन पवित्र कुश से करते बताये गये। यह आचार्य 19वीं सदी के प्रारंभ में हुए। देवी भागवत पुराण में स्वयं अग्नि राम के पास आकर उन्हें रावण की भावी योजना बतलाते हैं और ब्राह्मण वेशधारी अग्नि राम से सीता को उनकी सेफकीपिंग के लिए उन्हें सौंप देने का अनुरोध भी करते हैं। यहां अग्नि ही माया सीता का सृजन करते हैं और राम से इस अदल-बदल को सबने यहां तक कि लक्ष्मण तक से भी छुपा कर रखने की कसम ले लेते हैं। देवी भागवत पुराण माया सीता को अगले जन्म में द्रोपदी बनाता है, जबकि तमिल श्री वेंकटेच माहात्म्यम माया सीता को वेदवती और अगले जन्म की पद्मावती बताती है। मलयालम की अध्यात्म रामायण में वेदवती सीता के सामने प्रकट होकर स्वयं को किडनैपिंग के लिए प्रस्तुत करती हैं।

वेंडी को ये चीजें यूरोपीडीज के नाटक 'हेलेन' की नायिका की याद दिलाती है। जहां छाया-हेलेन तो पेरिस के साथ चली जाती है और वास्तविक हेलेन इजिप्ट में ही रह जाती हैं। किन्तु वेन्डी देखें कि प्राचीन ग्रीस में देवियों के डबल्स दिखाने की प्रथा आम थी। डेबोराह लायन्स की रिसर्च में उनकी पुस्तक का पांचवां अध्याय ही ''द गौडेस एंड हर डबल्स'' के शीर्षक से है। डॉ. एल.पी. टेसीटरी ने हेलेन से सम्बद्ध वृतांत की तुलना करते हुए लिखा कि जिस प्रकार स्टीकोरस के पालीनोड की हेलेन ट्राय कभी नहीं गई, उसी प्रकार सीता ने भी कमी लंका में प्रवेश नहीं किया।

समझा जा सकता है कि ये चिन्तायें सीता को अपनी ओर से अस्पर्शित पावित्र्य की प्रतीक बनाने से उपजी हैं। चैतन्य महाप्रभु के जीवन का एक वृतान्त इस चिंता को बताता भी है। कृष्णदेव कविराज1496 ई. की एक जीवनी ''चैतन्य चरितामृत'' में यह घटना बताई गई है। तदनुसार चैतन्य को मदुरै में एक रामभक्त ब्राहम्ण से मिलना हुआ। ब्राहम्ण यह सोचकर बड़ा हताश था कि मां सीता, जो इस विश्व की आद्या शक्ति और लक्ष्मी है।, वे रावण के स्पर्श से दूषित हो गई और वह खाना-पीना छोड़ देता है। संत चैतन्य ब्राहम्ण को समझाते हैं कि सीता का आध्यात्मिक रुप राक्षस

के द्वारा स्पर्शित कभी नहीं हो सकता था, वह तो माया सीता थी जो रावण द्वारा हरी गई। ब्राहम्ण तब जाकर प्रकृतिस्थ होता है और भोजन ग्रहण करता है। चैतन्य तब रामेश्वरम की यात्रा करते हैं जहां वे कूर्म पुराण को सुनते हैं और ब्राहम्ण को सुकून देने के लिए उन्हें एक प्रामाणिक शास्त्रीय चीज हाथ में लग जाती हैं। वे वापस मदुरै लौटते हैं। कूर्म पुराण की पांडुलिपि के साथ। ब्राहम्ण को वह पांडुलिपि देते हैं। ब्राहम्ण की खुशी का पारावार नहीं रहता।

लेकिन तात्विक रुप से देखा जाए तो एक ऐसे वैचारिक मॉडेल में जहां शरीर और संसार को माया माना जाता है और आत्मिक व आध्यात्मिक को ही असल, यह समाधान सत्य के परे भी नहीं था। सीता यही तो कहती हैं कि- ''प्रभो! रावण के शरीर से जो मेरे इस शरीर को स्पर्श हो गया है, उसमें मेरी विवशता ही कारण है। मैंने स्वेच्छा से ऐसा नहीं किया था। इसमें मेरे दुर्भाग्य का ही दोष है। जो मेरे अधीन है, वह मेरा हृदय सदा आप में ही लगा रहता है। परन्तु मेरे अंग तो पराधीन थे। उनका यदि दूसरे से स्पर्श हो गया तो मैं विवश स्त्री क्या कर सकती थी।'' अग्नि-परीक्षा की यह कथा, सीता के ये शब्द पुरुष के अत्याचार और बलात्कार की शिकार हर स्त्री के काम आने थे। ये शब्द बताते थे कि शरीर महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण है हृदय। जिस समाज ने शारीरिक इंटीग्रिटी को स्त्री के मूल्यांकन का आधार बनाया वह समाज माया सीता के रुपक को भी पूरी तरह समझ नहीं सका। पतिव्रत धर्म की बहुत मायाधारित व्याख्या कर नारीत्व के तपपूर्ण जीवन को सम्मान से वंचित कर दिया गया। अग्नि-प्रसंग के रुपक को न समझ पाने के कारण नारी के सम्मान को एक पब्लिक ट्रायल में अपघटित कर दिया। सीताओं के मन पर लगने वाली खरोंचें, घाव, उनसे निकलने वाली पीव देखी ही नहीं गईं। उनका प्रकारान्तर से मान-मर्दन किया जाने लगा। जिसने अत्याचार झेला उसे ही बदचलन कहा जाने लगा। गांवों में ही नहीं, शहरों में, अदालतों में, बलात्कार के आरोपियों के द्वारा अपने बचाव में उस गमजदा और मजलूम नारी के चरित्र का इम्पीचमेंट करना ही एक बड़ा उपकरण हो गया मानो किसी चरित्रहीन पर बलात्कार करने का मौलिक अधिकार पुरुष को सहज उपलब्ध हो। अग्नि प्रसंग की लोकोत्तरता का तेजस्वी अर्थ एक तरह के रि-विक्टिमाइजेशन में रेड्यूस कर दिया गया। बलात्कार के आधार पर वह स्त्री दूषित हो गई जिसने कदम-कदम पर अपने पति की खुशी का ख्याल रखा, जिसने सबके साथ भला व्यवहार किया और लोक/जगत के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरी ममता से पूरा किया। कंटीली राहों में पति के पांव से कंकड़ निकाले, उसके श्रम से उसके शरीर पर आ गयी पसीने की बूंदों को पोंछा, जिसने कई बार अपने पति की बेवफाई को सहा और उफ न की। लेकिन जब स्वयं उस हादसे के बाद पति के सामने चयन का क्षण गया तो उसने निर्णय देवताओं पर नहीं छोड़ा। कई बार तो बलात्कार करने वाले ने अबला को आग लगाकर खत्म कर देना चाहा और कभी स्वयं इस पति नाम के जीव ने ही ऐसी बर्बरता का परिचय देते हुए बलात्कृता पत्नी को आग लगाकर मार डालना चाहा क्योंकि वह स्वयं अपने ही संदेह से पराजित हो गया था। स्त्री का मूल्य कहां है? उसके हृदय में? उसकी बुद्धि में? जिन लोगों का मानना है कि वह सिर्फ उसकी टांगों के बीच में है, उन लोगों ने हमारे बहुत ही क्रांतिकारी और प्रगतिशील पुरा-प्रसंगों की बहुत संकीर्ण व्याख्या की। पवित्रता की इस तत्कथित संस्कृति ने सीता को लांछना दी और द्रोपदी को वैश्या कहा है जबकि ये दोनों कथाएं स्त्री की वास्तविक धातु (substance) का परिचय कराने और सम्मान करने की कथाएं हैं। स्त्री का मॉरल सेंटर स्त्री के हृदय में है, उसकी प्रज्ञा, धैर्य और करुणा में है, उसके साहस और दृढ़ता में है। दरअसल यौनाधारित पवित्रता-परीक्षा स्त्री का अवमूल्यन और विमानवीकरण है। प्रकृति के तत्वों द्वारा प्रमाण-पत्र देना यह बताता है कि स्त्री inherently valuable है, न कि शारीरिक रुप से। शरीर के आधार पर स्त्री पर जजमेंट कुछ वैसा ही है जैसे विकलांगता के आधार पर लोगों पर निर्णयन। शरीर से ही स्वयं के बारे में या दूसरे के बारे में निष्कर्ष क्यों निकाले जाएं? यह एक फेटिश है, एक जड़ासक्ति। जेसिका वेलेन्ती : 'द प्यूरिटी मिथ' में लिखती हैं - When young women are taught about morality, there's not often talk of compassion, kindness, courage or integrity....while boys are taught that the things that make them men-good men-are universally accepted ethical ideals, women are led between our legs. इसी के चलते आज पश्चिमी दुनिया में एक नई लहर Re-verginization की, पुनर्कोमार्यीकरण की चल रही है जिसके चलते लड़कियां प्लास्टिक सर्जरी के जरिए अपने योनिच्छद (humen) की पुनर्निमिति करा रही हैं। सीता की साक्षी में देवताओं का, प्रकृति के प्रतिनिधियों का उतरना इस बात का प्रतीक है कि स्त्री की पवित्रता प्राकृतिक है, वह प्लास्टिक सर्जरी नहीं है। अग्नि-परीक्षा स्त्री के पनिशमेंट का नैरेटिव नहीं है। वह स्त्री की नैसर्गिक उदात्तता का वृतान्त है। जो समाज शरीर को माया मानता आया, उसी समाज ने अपहृता सीता को सम्मान दिया, उसे मंदिरों में रखा क्योंकि निष्ठा हार्दिक होती है, अनन्यता मनसा वाचा कर्मणा है। पवित्रता की डीपफ्रीजिंग नहीं है वहां।

वेंडी डोनिगर कहती हैं : Over the centuries, sita's fire ordeal has proved problematic for different reasons to different south Asians, from pious apologists who were embarrassed by the god's unfair treatment of his wife, to feminists who saw in sita's acceptance of the "cool" flames, in Tulsi's telling, and in connection with sati, an alarming precedent for women who become satis. वेंडी बड़ी चालाकी तो

बरतती हैं, लेकिन स्त्री की पवित्रता के निर्धारण के ग्रीको-रोमन तौर तरीकों पर तुलना की दृष्टि से भी कुछ नहीं बोलतीं जबकि वे स्वयं उस परंपरा के ज्यादा नजदीक हैं। कैसे ग्रीक पौराणिकी और साहित्य में Danar या Auge या Aerope या Phronime की कथाओं में ''फ्लोटिंग चेस्ट'' जैसी चीजें थीं जहां सेक्सुअल अशुद्धता या यौनाचार की स्वच्छंदता के आरोपों में स्त्री और उसकी अवैध संतान को बक्से में बंद कर समुद्र की लहरों में छोड़ दिया जाता था। सीता की कथित अग्नि-परीक्षा की "Cool flames" पर तो इन्वर्टेड कॉमा वेंडी ने लगाया, हालांकि उसके कई उदाहरण मैंने ऊपर उद्धृत भी किए, लेकिन उस जल-परीक्षा के बारे में वेंडी मौन क्यों रहती हैं। जो शादी से पहले कौमार्य खो देने वाली लड़कियों या अपने पति को धोखा देने वाली पत्नियों के प्रति ग्रीकोरोमन पौराणिकी में जब तक बताई गयी है। Aeschylus की Suppliants में Danaids को यह उपदेश दिया गया कि कौमार्य/पवित्रता (Chastity) जीवन से ज्यादा महत्वपूर्ण है। वहां तो ऐसी 'वर्थलेस गर्ल' को मार डालने या निष्कासित कर देने के उदाहरण भरे पड़े हैं। वहां बलात्कार भी एक तरह की संपत्ति चोरी के रुप में दर्शाया गया है जिसमें कन्या अपना आर्थिक मूल्य और महत्व खो देती है। Aeschines (1.182) की वह घटना देखिए जिसमें एक Seduced पुत्री को एक खाली कमरे में एक उन्मत्त घोड़े के सामने उसे मार डालने के लिए छोड़ दिया जाता है। प्लूटार्क के अनुसार एथेन्स के पिता अपनी 'अपवित्र' कन्या को दासी के रुप में बेच दिया करते थे। यह वहां विधि के भीतर अनुज्ञेय माना गया था। 'अपवित्र' स्त्री को समुद्र में डुबो देने के वृत्तान्त भी वहां कम नहीं है। हीरोडोट्स की उस कथा को याद करें। जहां फ्रोनाइम नामक 'अपवित्र' कन्या का क्रुद्ध पिता Etearchus अपने अतिथि मित्र व्यापारी Themison को अपनी लड़की समुद्र में डुबोने के लिए देता है और वह उसे समुद्र में डुबकी दिलाकर ओवरसीज ले जाता है। जहां वह Polymnestus की रखैल बन जाती है। Appollodorus एक ऐसे ही दंड का वर्णन करता है जहां Scylla नामक 'अपवित्र' कन्या को माइनोस -वह व्यक्ति जिसके प्रति वह ''वासनात्मक विचार'' रखने से अपवित्र हुई- के जहाज से बांधकर डुबो दिया जाता है। Omitowoju ने तत्कालीन ग्रीक समाज का अध्ययन कर 1997 में यह निष्कर्ष निकाला कि Rape was notoriously hard to prove and the victims were often doubted or deemed to be complictit. खासकर पुरुष रिश्तेदार तो किसी लड़की से बलात्कार होने के दावे पर भारी शक करते थे और उसके निर्दोष होने पर भी उसे काफी कठोर दंड देते थे। ग्रीको रोमन ''परीक्षाओं'' में सिद्धान्त यह था कि "God will defend the right" ग्रीक टैक्स्ट स्त्री के पावित्र्य (Chastity) की ऐसी परीक्षाओं से भरे पड़े हैं। Billautt (1991-216) का तर्क : Such a test provided visible evidence to all present that the accused is innocent or guilty. होलियोडोरस की Aethiopica में Charicleia नामक नायिका अपनी पवित्रता की परीक्षा ग्रिड-आयरन पर चलकर देती है। Pausanias एक ऐसे ही पवित्र्य परीक्षण के बारे में बतलाता है जिसमें संदिग्ध स्त्रियों को महिष का रक्त (Bull's blood) पीना पड़ता था जिसे ग्रीक लोग विषैला मानते थे। Achiller Tatius की कृति "Cleitophon" and Leucippe के अंत में अपना ''कौमार्य'' खोने वाली औरत की पवित्रता का परीक्षण उसके गले में उसकी शपथ बांधकर उसे पानी में भीतर ले जाकर होता है। यदि औरत झूठ बोल रही होगी तो पानी उसे डुबो देगा। एक अन्य प्रसंग में Leucippe को अपनी पवित्रता सिद्ध करने के लिए एक गुफा में बंद कर दिया जाता है। जब Acrisius को यह पता लगता है कि Danae ने एक अवैध संतान को जन्म दिया है तो मां और शिशु दोनों को एक बक्से में बंद कर समुद्र में फेंक दिया जाता है। यूरिपिडीज की Auge में 'प्रवाहित मंजूषा' वाली परीक्षा से गुजरती है, हालांकि इस मिथक के बहुत से भिन्न-भिन्न संस्करण मिलते हैं। कहीं उसका पिता उसे शादी के बाहर बच्चे को जन्म देने के लिए डुबोता मिलता है तो कहीं वह समुद्र पार बेचे जाने के लिए व्यापारी को दे दी जाती है। एक बक्से में बंद कर खुले समुद्र में छोड़ देना दो तरह की यातना थी। एक ही साथ। एक्सपोजर भी, एन्क्लोजर भी। यूरिपिडीज का ही एक और चरित्र है, Aerope नामक कन्या। उसे एक दास के साथ सेक्स करने के अपराध में उसका पिता समुद्र में डुबो देने भेजता है लेकिन डुबाने गया व्यक्ति उसे समुद्र पार भेज देता है। Pleisthenes नामक एक अन्य व्यक्ति से शादी के लिए।

वेंडी इन सब वृत्तान्तों का कोई उल्लेख नहीं करतीं। वे एक चालाकी और बरतती हैं। 'सीता' को शब्द-साम्य के आधार पर ही -सती' से जोड़ देने की। सती का सीता से क्या कनेक्शन हो सकता है? सती पति की मृत्यु के बाद मरती है, सीता पति के सामने ही प्राणों की बाजी लगाने को प्रस्तुत हैं। बल्कि यदि शब्द-साम्य ही कुछ है तो सीता के सामने मुझे तालमुद के 'सोता' शब्द की याद आती है। शब्द Sotah नामक क्रिया से उद्भूत है जो उस स्थिति का संकेत है जब किसी पुरुष की पत्नी अलग चली जाए- If any man's wife go aside वह स्थिति Sisteh कहलाती है। 'सीता' से फिर शब्द-साम्य और परिस्थिति-साम्य Sotah उस स्त्री को कहा गया है जो अपने पति के द्वारा अपवित्रता (Infidelity) के संदेह में घिरी है और जिसे अपनी पवित्रता को स्थापित करने के लिए कड़वा जल पीना है, Bitter Water. क्या हिन्दी में ''कड़वा घूंट पीना' इसी तालमुद कालीन परम्परा से चलकर आया? सीता ने Bitter Water तो नहीं पिया लेकिन वे आग से होकर गुजरीं।

-सुंदरकांड एक पुर्नपाठ भाग 11 से साभार

--------■ ■--------

भगवद अनुग्रह - विचित्र अनुभव

जगन्नाथ सिंह रघुवंशी, मैयर

श्री गणेशाय नम:

हमारे अर्चाविग्रह धातु या पाषाण नहीं है।

जिस अद्भूत अनुभव का मैं आज विवरण दे रहा हूँ, पहले उसकी पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में कुछ कहना अनुपयुक्त न होगा।

हमारा कुटुम्ब सनातन धर्म के श्री निम्बार्क-सम्प्रदाय का अनुयायी है। मेरे पितामह श्री भबूत सिंह जी रघुवंशी मध्यप्रदेश के गुना जिले के ग्राम-हिनौतिया के जमींदार थे। हमारा मकान गड़ी उनके पूर्व से निर्मित है। कुछ हिस्सा उन्हीं के समय निर्मित हुआ था। हमारा श्री राधाकृष्ण जी का कौटुम्बिक मंदिर मध्य ग्राम में और हनुमान जी का बगीचा में उन्होंने ही प्रतिष्ठित कराये थे। इन मंदिरों को 125 वर्ष से अधिक हो चुके हैं। पूर्व से हमारे कुटुम्बी श्री निम्बार्क सम्प्रदाय में ही दीक्षित होते रहे हैं। मेरा जन्म भी उसी वायुमंडल में हुआ। उसी वातावरण में मेरा लालन-पालन हुआ। जब से मुझे होश है, तब से सनातन धर्म के संस्कारों का मुझ पर प्रभाव रहा है। मेरी गुरू दीक्षा यज्ञोपवीत सोलह वर्ष की अवस्था में हुआ था। उस समय मेरे पिताजी श्री इमरत सिंह जी रघुवंशी ने वैष्णव संत श्री सीताराम दास जी - निम्बार्की से गुरू मंत्र दिलाया और इसी संप्रदाय के संत श्री शयामाशरण जी से गोपाल सहस्त्र नाम का विधिवत पाठ पूजन-सन्ध्या आदि से दीक्षित करा दिये थे और कुछ होश आते ही मैं अपने दीक्षा मंत्र का जाप और गोपाल सहस्त्र नाम रामायण-मास पारायण का नियमित पाठ करने लगा।

इस प्रकार से संस्कारों में लालित-पालित होने पर और निरंतर संध्या पूजा, जाप पाठ आदि चलते रहने पर भी आधुनिक काल के वायुमंडल का भी मुझ पर कोई असर न हो यह बात नहीं थी। अनेक बार मुझे ईश्वर के अस्तित्व पर संशय होता और लगता कि यह सब निरर्थक ही तो नहीं है।

किन्तु कब जीवन का निशाकाल आ जाये अत: जो कुछ कर रहा हूँ उसे छोड़ूँगा कभी नहीं।

एक दिन की बात है मैं अपने घर पहुँचा तो धर्मपत्नी ने कहा आपको छोटी बेटी जिसका नाम रीना है बुलाये है जो अशोक नगर में अपने परिवार के साथ रहती है, अभी चले जाओ, कारण मुझे पता नहीं है। हमारे लड़के और तीन लड़कियाँ हैं। मैं उसी समय चला गया और वहाँ पहुँचा तो रीना ने कहा कि करैया गाँव वाले जीजाजी दूसरी शादी करना चाहते हैं, जिनको हमारी मंझली बेटी जिसका नाम रचना है ब्याही है। मुझसे रीना ने कहा

उनको रोकिये ऐसा न करें, अब मैं क्या करता, भगवान की प्रार्थना ही सहारा था, प्रभु कुछ ऐसा मार्ग प्रशस्त करें, जिससे उस परिवार की सुख-शांति बनी रहे। इसमें दूसरी शादी का कारण हमारी बेटी रचना के सन्तान न होना था। जिसके लिये उनके द्वारा डॉक्टरी परीक्षण आदि प्रयासों में सफलता की आशा समाप्त सी लग रही थी। अब मैं असमंजस में, कोई राह नहीं सूझ रही थी। आखिर छोटे बालक उपेन्द्र के साथ प्रभु प्रार्थना करते हुये करैया ग्राम पहुँचे, और चर्चा हुई तो समधी साहब भावुक होकर बोले, हम अपनी मर्जी से नहीं रचना की सहमति से ही कर रहे थे। वैसे उनका पूरा परिवार रचना को विशेष स्नेह करता है। अब मैं क्या बोलूं, मगर पूर्व प्रार्थनानुसार भगवान हृदय में बैठ बोले, कहलवाने लगे मुझसे (जिसका स्वरूप परिणाम में मिलेगा) कि आप जैसा चाहते हैं आपकी सहमति में हमारी भी सहमति है। एक निवेदन है अभी जेष्ठ मास है छ: माह बाद अगस्त माह में अपनी सर्वसम्मति से अच्छा सम्बन्ध कर लेंगे, अभी रूक जायें तो उन्होंने बहुत अच्छा हम तैयार है। ऐसा प्रसन्न मन से कहा।

अब वापसी में यह विचार आया कि ये भगवान ने क्या कहलवा दिया फिर विचार आया प्रभू की कृपा भी हो सकती है, तभी यह शब्द बिना सोच विचार के मुख से निकले। कुछ तो कारण होगा। बाद में ऐसी भी बातें सुनने में आई, कुछ नहीं होना हाल के लिये टाल दिया है। जो सत्य भी प्रतीत होता है। मेरी पूर्व संस्कार अनुसार प्रभु प्रार्थना चल ही रही थी। इष्ट कृपा से सन् 2007 के अगस्त माह में मुझे धर्मपत्नी सहित रामेश्वरम् गंगा जल चढ़ाने को जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिस गंगा जल को सन् 2005 के जून माह में गंगोत्री से भर कर लायेंगे।

यात्रा प्रारंभ की पहले जगदीशपुरी पहुँच दर्शन कर कल्पवृक्ष पर पंडित जी से पूजन कर कामना सूत्र बांधा, फिर त्रपती पहुँच बालाजी से कामना आरती प्रार्थना की और रामेश्वरम गंगा जल चढ़ा प्रार्थना कर द्वारका पहुँच प्रार्थना कर सोमनाथ प्रार्थना कर वापस घर आ गये। अब हृदय में देवों की कृपा का विश्वास स्थापित हो चुका था कि प्रार्थना सुनी जा चुकी है और भगवद अनुग्रह अनुसार कुछ समय बाद छोटी बेटी रीना ने फोन से सुखद समाचार दिया कि हमारी रचना दीदी माँ बनने वाली है।

सुन कर अपार हर्ष के साथ देवों को सत-सत वन्दना करते हुये हर्ष विभोरित बगिया वाले हनुमान जी के दर्शन करने पहुँचा तो यकायक मेरी आँखों से कुछ आँसू निकल पड़े, कंठ अवरूद्ध हो गया तब मुझे अनुभूति हुई जैसे किसी अकथनीय कोमल वस्तु ने मेरी आँखे पौंछ दी। अब कामना प्राप्ति का अवलम्ब देवताओं से बढ़ता गया, ऊषाकाल में ही उठकर स्नान, संध्या पूजा आदि आरंभ की। तारों के रहते हुए प्रात:काल की संध्या हो जाना उत्तम माना जाता है, यद्यपि बयालीस वर्षो से मेरी संध्या पूजन चल रही थी। गाँव रहते हुये मैं अपने कोटुम्बिक मंदिर राधाकृष्ण और हनुमान जी के दर्शन करने लगा और अपने दीक्षा मंत्र का निरंतर जाप, यद्यपि बीच-बीच में विस्मृत भी हो जाता है। सचमुच प्रार्थना ऐसी ही चमत्कारी है, करूणा सागर प्रभु भी विवश हो जाते हैं, उन्हें भी वह करूणा पुकार सुननी ही पड़ती है।

हनुमान जी की कृपा का विचित्र अनुभव

एक फरवरी सन् 2016 को मुझे शाम भीषण आघात हार्टअटेक हुआ। तब पूर्व संस्कार अनुसार हनुमान चालीसा की चौपाई का जाप शुरू हुये - नाशैरोग हरै सब पीरा जपत निरन्तर हनुमत वीरा। और परिवारजन पुत्र आदि गुना इलाज को ले गये, जहाँ से डॉ. ने इंदौर भेज दिया, वहाँ डॉ. ने जांच के बाद कहा कि इनकी हृदय की एक नली 20 प्रतिशत जाम है। दूसरी फटने से मलमा वाल में भरने से वाल खराब हो गया है। समय दो घन्टे और शेष है, घर ले जाईये। कुछ नहीं हो सकता।

हनुमान जी की अदृश्य कृपा से पुत्रों ने धीरज से काम लिया और मुझे दिल्ली उपचार को ले जाने डॉ. से कहा, तो डॉ. ने निराशा से कहा कोशिश कर सकते हैं, इब तो ईश्वरी चमत्कार ही हो सकता है और मुझे रेलगाड़ी से ले चले, रास्ते में जाप प्रभाव से असहनीय कष्ट भी नहीं था। बाईस घन्टा सफर के बाद रात 2 बजे दिल्ली स्टेशन उतरे। जाप प्रभाव से हनुमान जी की कृपा चल ही रही थी। स्टेशन से निकल गंतव्य स्थान को जाने टैक्सी की कोशिश में थे कि सामने से एक छोटे कद सिक्ख सज्जन पास आये, बोले कहां जाना है, तो स्थिति से अवगत कराया तो सरदार जी बोले, फाइल दिखाइये, इन्दौर अस्पताल फाइल देखी और तुरंत टैक्सी में बैठाकर एम्स अस्पताल हृदय कक्ष ले गये। जहाँ सरदार जी ने पूर्ण प्रयास कर मुझे भर्ती कराकर कहाँ गये पता नहीं चला तब मेरे लघु भ्राता दशरथ सिंह जो सामान्य पंचायत हमारे ग्राम हिनौतिया के दो बार निर्विरोध सरपंच रह चुके हैं। मुझसे कहा - दादा देखो सरदार जी के रूप में हमारे हनुमान जी ही थे। हम समझ न सके चरण पकड़ने से वंचित रह गये। इस प्रकार दृश्य रूप में हनुमान जी ने कृपा की और यही मेरी सारी जांच होने के बाद सुबह ऑपरेशन होने के बाद तीन दिन में होश आया। तब हृदय में जाप चल रहा था (नाशैरोग हरै सब पीरा जपत निरन्तर हनुमत वीरा)। एक माह अस्पताल में भर्ती रहने के बाद स्वस्थ होकर गाँव वापिस आये। इस जीवनदान प्राप्ति का एक और महत्वपूर्ण बिन्दु है मुझे चाहने वाले भगवान के भक्तों, सन्तों, माता, बहनों और रघुकुल गौ सुरक्षा मानस सत्संग समिति के महानुभावों द्वारा प्रार्थना दान। जब सुना कि मेरा अंतिम समय आ गया तो सभी परहिती स्वजनों ने अपने-अपने ढंग से प्रार्थना की कुछ ने अखण्ड रामायण पाठ दान, कुछ ने गिरराजजी की परिक्रमा कर दान, इस प्रकार सभी सुजनों ने अपने शुभ कर्मो का मुझे जीवन के लिये दान किया, जिसका प्रतिफल पूर्ण रूप से करूणा सागर ने मुझे दिया, जिनकी कृपा से अब पूर्ण स्वस्थ हूँ। मैं उन सभी परहिती सुजनों का ऋणी हूँ करूणा वरूणो लय से प्रार्थना करता हूँ। मेरा कुछ शुभ कर्म हो और मेरी करूण पुकार को सुनते हुए मेरे जीवन के दानदाताओं को सहस्त्र गुना प्रदान करें। इस प्रकार के विचित्र अनुभव - भगवद अनुग्रह से ही संभव है।

(श्रीकृष्ण शरणं मम:)

-ग्राम-हिनौतिया, जिला-गुना (म.प्र.)

--------■ ■--------

रघुकलश के संभागीय ब्यूरो प्रमुख

सामाजिक बंधु रघुकलश में रचनाएं और सामाजिक समाचार, ग्राहक बनने एवं विज्ञापन के लिए संभागीय ब्यूरो प्रमुखों से संपर्क कर सकते हैं। उनके नाम और फोन नम्बर इस प्रकार हैं-

ग्वालियर-चंबल संभाग ब्यूरो प्रमुख : ओमवीर सिंह रघुवंशी, मो.09893247389, 09171582598

इंदौर ब्यूरो प्रमुख : राजेश रघुवंशी, मो. 09826578006, रणवीर सिंह रघुवंशी मो. 08959811503, 09522222841

खानदेश ब्यूरो प्रमुख : डॉ. महेन्द्र जयपाल सिंह रघुवंशी, नंदूरबार महा. मो. 09423942750

विदर्भ ब्यूरो प्रमुख : दिलीप सिंह रघुवंशी, मो. 08485031185, 09960129404

धूलिया ब्यूरो प्रमुख : आलोक विजय सिंह रघुवंशी, धूलिया महा. मो. 09421991991

अकोला ब्यूरो प्रमुख: संजय रघुजीत सिंह रघुवंशी, मो. 09850509244

अहमदनगर ब्यूरो प्रमुख : पी.एम. रघुवंशी, मो. 09922079523, 09637081936

मध्यप्रदेश की धरा के अलौकिक सपूत

अनिल पटेल

परमपिता परमेश्वर ने जहां एक ओर मध्यप्रदेश की धरा को अलौकिक प्राकृतिक सौंदर्य प्रदत्त किया है, वहीं साथ-साथ ऐसे अदभुत सपूत भी दिये हैं जिन्होंने अपनी अनुपम विशेषताओं से इस धरा का नाम न केवल भारतवर्ष में बल्कि सम्पूर्ण विश्व में रोशन किया है। उनमें से कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व का परिचय नीचे प्रस्तुत है:-

राजनीति के शिखर पुरुष डॉ. शंकरदयाल शर्मा

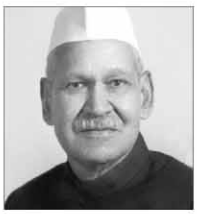

भारत के नौवें राष्ट्रपति स्वर्गीय श्री शंकरदयाल शर्मा जिनका कार्यकाल 1992 से 1997 तक रहा था, का जन्म मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के प्रसिद्ध वैद्य पंडित खुशीलाल के पुत्र के रुप में हुआ था। डॉ. शर्मा की शिक्षा सेंट जॉन्स कालेज, आगरा कालेज, पंजाब यूनिवर्सिटी एवं लखनऊ यूनिवर्सिटी में हुई थी। उन्होंने अपनी विधि की उपाधि :एलएलडी: फिटस विलियम कालेज, केम्ब्रिज यू.के. से प्राप्त की थी। माननीय श्री शर्मा ने विधि के प्रोफेसर के रुप में लखनऊ एवं केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अपना योगदान दिया था। डॉ. शर्मा भोपाल राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री भी रहे थे। वे 1972 में एआईसीसी के प्रेसीडेंट निर्वाचित हुए थे। केन्द्रीय मंत्रिमंडल में केन्द्रीय मंत्री के रुप में एवं आंध्रप्रदेश के राज्यपाल के रुप में भी श्री शर्मा ने अपनी सेवायें राष्ट्र को दी थीं। साथ ही साथ पंजाब एवं महाराष्ट्र के राज्यपाल के पद को भी श्री शर्मा ने सुशोभित किया था। राष्ट्रपति बनने के पूर्व डॉ. शर्मा भारत के आठवें उपराष्ट्रपति भी रहे थे। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डॉ. शर्मा द्वारा लिखी गई पुस्तकों में कुछ प्रमुख पुस्तकें शिक्षा के आयाम, चेतना के स्त्रोत, हमारी सांस्कृतिक धरोहर, टू वर्डस इंडिया आदि रही हैं।

भारतरत्न श्री अटलबिहारी वाजपेई

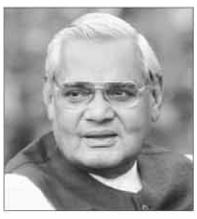

मध्यप्रदेश के ग्वालियर नगर में 25 दिसम्बर 1924 को जन्में श्री अटलबिहारी वाजपेई तीन बार भारत के प्रधानमंत्री रहे हैं। एक कुशल वक्ता, लोकप्रिय कवि एवं राजनीति के अद्वितीय व्यक्तित्व श्री अटलबिहारी वाजपेई भारतीय जनता पार्टी के निर्विवाद नेता रहे हैं। श्री वाजपेई की प्रारंभिक शिक्षा सरस्वती शिशु मंदिर ग्वालियर एवं महाविद्यालयीन शिक्षा ग्वालियर एवं कानपुर में हुई। राजनीति के क्षेत्र में मोरारजी देसाई सरकार के समय श्री वाजपेयी एक लोकप्रिय विदेश मंत्री रहे थे। श्री वाजपेयी जी को अपनी अद्वितीय प्रतिभा के कारण अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, इनमें पद्म विभूषण पुरस्कार 1992, डी-लिट-कानपुर विश्वविद्यालय 1993, लोकमान्य तिलक एवार्ड 1994, भारत रत्न पंडित गोविंदवल्लभ पंत एवार्ड 1994, भारत रत्न सम्मान 2015। वाजपेईजी की कुछ लोकप्रिय कवितायें निम्नानुसार हैं- कदम मिलाकर चलना होगा, गीत नया गाता हूं, शीश नहीं झुकेगा, यक्ष प्रश्न, ऊंचाई, आओ फिर से दिया जलायें, पहचान आदि।

नोबल पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी

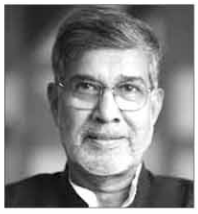

मध्यप्रदेश की माटी में जन्में श्री कैलाश सत्यार्थी को शांति के लिए नोबल पुरस्कार से नवाजा गया है। अभी तक वे मध्यप्रदेश से प्रथम नोबल पुरस्कार विजेता हैं। श्री सत्यार्थी का जन्म 11 जनवरी 1954 को मध्यप्रदेश के विदिशा नगर में हुआ था। मूल रुप से उनका नाम कैलाश शर्मा था जो बाद में कैलाश सत्यार्थी में परिवर्तित हुआ। मूल रुप से इंजीनियर श्री सत्यार्थी समाजसेवा के क्षेत्र में पदार्पण से पूर्व एक प्रोफेसर भी रहे हैं। श्री सत्यार्थी ने बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए ढेरों कार्य किये। उनके काम को पहचान मिली बाल श्रमिक बचाओ आंदोलन से। फिलहाल वे संयुक्त राष्ट्र संघ के मिलेनियम डेवलपमेंट गोल के प्रमुख है तथा बाल श्रम एवं बंधुआ मजदूरों को बचाने के लिए वे काम कर रहे हैं।

हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर

पंडित माखनलाल चतुर्वेदी

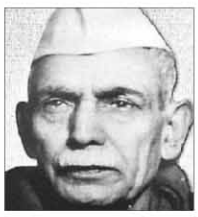

मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले की बाबई तहसील में 4 अप्रैल 1889 को जन्में ददा के रुप में प्रसिद्ध श्री चतुर्वेदीजी एक ख्यातप्राप्त कवि, लेखक एवं पत्रकार थे। वे सरल भाषा एवं ओजपूर्ण भावनाओं के अनूठे कवि थे। उन्होंने जो लिखा खूब लिखा एवं लाजबाव लिखा। उनकी रचनाओं में हिम तरंगणी, समय के पांव, समग्र कवितायें,

माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली काफी प्रसिद्ध रहीं। दद्दा को पदमभूषण एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार से भारत सरकार द्वारा नवाजा गया था। श्री चतुर्वेदी की मृत्यु 30 जनवरी 1968 को हुई।

व्यंग्य के शिरोमणि श्री हरिशंकर परसाईं

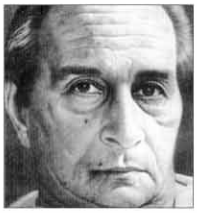

22 अगस्त 1924 को होशंगाबाद जिले के ग्राम जमानी मे व्यंग्य शिरोमणि श्री परसाईं का जन्म हुआ था। वे हिन्दी के पहले रचनाकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया एवं अपनी रचनाओं में एक खास किस्म का अपनापन प्रस्तुत कर व्यंग्य को लोकप्रिय बनाया। श्री परसाईं का निधन 10 अगस्त 1995 को जबलपुर शहर में हुआ था। उनकी प्रमुख रचनाओं में कहानी संग्रह हंसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे, भोलाराम का जीव, रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज, ज्वाला और जल, संस्मरण, तिरछी रेखाये आदि शामिल हैं।

अद्भुत व्यंग्य विधा के जादूगर श्री शरद जोशी

हिंदी जगत के प्रमुख व्यंग्यकार एवं व्यंग्य विधा के जादूगर श्री शरद जोशी का जन्म 21 मई 1931 को मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में हुआ था। उनकी प्रमुख कृतियों में परिक्रमा, किसी बहाने, जीप पर सवार इल्लियां, तिलस्म, रहा किनारे बैठ आदि हैं। उनके व्यंग्य नाटक हैं-अंधों का हाथी और एक था गधा। उपन्यास में मैं, मैं केवल मैं उर्फ कमलमुख बी.ए.। शरद जोशी अपने समय के अनूठे व्यंग्य रचनाकार थे। उन्होंने वक्त की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक विसंगतियों को अपनी अत्यंत पैनी निगाहों से देखा एवं व्यंग्य को अत्यंत लोकप्रिय बनाया। 1990 में भारत सरकार ने पद्मश्री से सम्मानित किया। श्री जोशी की मृत्यु 5 सितम्बर 1991 में मुम्बई में हुई।

वैज्ञानिक श्री अनिल काकोड़कर

मध्यप्रदेश की धरती पर बड़वानी में 11 नवम्बर 1943 को पैदा हुए श्री काकोड़कर न्यूकिलयर साइंटिस्ट हैं। श्री काकोड़कर एटॉमिक एनर्जी कमीशन के चेयरमेन एवं भाभा एटामिक रिसर्च सेंटर के डायरेक्टर भी रहे हैं। भारत द्वारा किये गये न्यूकिलयर टेस्ट में श्री काकोड़कर का मुख्य किरदार रहा है। श्री काकोड़कर को पद्मश्री 1998, पदमभूषण 1999 एवं पदमविभूषण 2009 से सम्मानित किया जा चुका है।

फिल्मी रंगमंच के प्रसिद्ध कलाकार

श्री अशोक कुमार खंडवा, श्री किशोर कुमार, खंडवा, सुश्री लता मंगेशकर इंदौर, श्रीमती जया बच्चन भोपाल, श्री सलीम खान इंदौर, श्री जानी वाकर, इंदौर एवं श्री जावेद अख्तर ग्वालियर, श्री सलमान खान इंदौर, श्री शरत सक्सेना भोपाल, श्री रघुवीर यादव जबलपुर, श्री गोविंद नामदेव सागर, श्री आशुतोष राणा गाडरवारा, श्री मुकेश तिवारी सागर, श्री अर्जुन रामपाल जबलपुर, श्री अन्नू कपूर भोपाल, सुश्री दिव्यांका त्रिपाठी भोपाल, श्री राजीव वर्मा भोपाल।

न्यायिक क्षेत्र की प्रसिद्ध हस्तियां

श्री जगदीश शरण वर्मा- मध्यप्रदेश की माटी में जन्में श्री वर्मा भारत के मुख्य न्यायाधीश रहे हैं और उनका कार्यकाल 25 मार्च 1997 से 18 जनवरी 1998 रहा। आपका जन्म सतना में 18 जनवरी 1933 को हुआ था।

श्री रमेशचन्द्र लाहोटी- भारत के मुख्य न्यायाधीश के रुप में 01 जून 2004 से 31 अक्टूबर 2005 तक कार्यरत थे। आपका जन्म 1 नवम्बर 1940 को गुना मध्यप्रदेश में हुआ था।

रिजर्व बैंक के गर्वनर-श्री रघुराम गोविंद राजन का कार्यकाल 4 सितम्बर 2013 से 4 सितम्बर 2016 तक रहा। श्री राजन का जन्म 3 फरवरी 1963 को भोपाल, म.प्र. में हुआ था।

काव्य जगत के प्रसिद्ध कवि

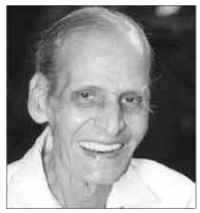

कवि श्री प्रदीप का जन्म 6 फरवरी 1915 को बड़नगर मध्यप्रदेश में हुआ था। उनके प्रसिद्धतम गीतों में- ऐ मेरे वतन के लोगों का जब सुश्री लता मंगेशकर ने गायन किया था तब भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरु की आंखों से अश्रुधारा बह निकली थी।

मध्यप्रदेश की माटी में जन्मे उपरोक्त सपूतों ने राज्य का नाम न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में रोशन किया है।

- शाहपुरा, भोपाल

फोन नं.-0755-2424703

--------■ ■--------

KAMLA NEHRU HR. SEC. SCHOOL
&
SUNSHINE KINDERGARTEN

Imparting Education Building Lives • Blossoming Hearts Developing Minds

शिवचरण सिंह रघुवंशी
संस्थापक सचिव

CBSE Affiliated
ISO 9001:2008 Certified School

- Interactive Digital White Board Technology Equipped Classrooms
- Multimedia Classrooms with TeachNext & LearnNext
- Interactive English Language Lab & Maths Lab
- School Band, NCC, Bharat Scout & Guide and Red Cross Unit
- Quality & Comprehensive Education at Affordable Fees

KAMLA NEHRU MAHAVIDYALAYA
(B.Ed. College)

[Approved by the National Council for Teacher Education & M.P. Govt.]
(Affiliated to Barkatullah University, Bhopal)

Ph. : 0755-4244754 E-mail : knmahavidyalaya@yahoo.co.in Website : kamlanehru-college.org

Kamla Nagar, Kotra Sultanabad, Bhopal. Ph. : 2762130, 4244355
E-mail : kamla.nehru.school@gmail.com Website : kamlanehruschool.in

सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक एवं अमृत संदेश के कार्यकारी संपादक अरुण पटेल सम्मानित

मुख्यमंत्री निवास पर सम्मानित हुए पत्रकार

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपने निवास पर आयोजित कार्यक्रम में राज्य शासन के सम्मानों के लिये चयनित पत्रकारों का सम्मान किया। चयनित पत्रकारों को वर्ष 2015 व 16 के लिए राष्ट्रीय, राज्य-स्तरीय एवं आंचलिक पत्रकारिता सम्मान प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम में सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक, अमृत संदेश के कार्यकारी संपादक एवं रघुकलश के संपादक अरुण पटेल को सत्यनारायण श्रीवास्तव राज्य-स्तरीय पत्रकारिता सम्मान प्रदान किया गया।

हमें सुधारने का कार्य जारी रखे पत्रकारिता : शिवराज

एक दौर था स्वतंत्रता संग्राम का। देश की आजादी की लड़ाई अखबारों ने लड़ी। यह लड़ाई यदि आरंभ हुई और अंजाम तक पहुंची तो अखबारों के कारण। आजादी के बाद नवनिर्माण का दौर आया। पत्रकारिता ने अपने दायित्व का निर्वाह किया। पत्रकारिता देश का एजेंडा तय करती है। शासन-प्रशासन की कमियों को उजागर करने का कार्य तन्मयता से कर रही है। यह बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। पत्रकार खबर लाने तथा रिपोर्टिंग में जान हथेली पर लेकर काम करते हैं। वे हर खतरे को उठा कर जनता के बीच सच लाने का काम करते हैं। यह साधारण कार्य नहीं है। निंदकों को समीप रखने का उल्लेख करते हुए चौहान ने कहा कि पत्रकारिता शासन-प्रशासन की कमियों को उजागर कर सही दिशा दिखाने का कार्य कर रही है। उन्होंने उम्मीद जताई की पत्रकारिता ऐसे ही निष्पक्ष रह कर अपना कार्य जारी रखेगी।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा सुबह सवेरे के प्रबंधक संपादक अरुण पटेल को सत्यनारायण श्रीवास्तव राज्य स्तरीय पत्रकारिता सम्मान से सम्मानित किया गया। मुख्यमंत्री निवास पर पटेल के बचपन के साथी भी सम्मान समारोह में शामिल हुए। जिसमें बाएं से दाएं कन्नूलाल अग्रवाल,रमेशचंद्र खंडेलवाल, अरुण पटेल, पं.जवाहर लाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय सोहागपुर के संस्थापक प्राचार्य एवं समिति के सचिव अरविन्द सिंह चौहान,महाविद्यालय के प्रोफेसर और महाविद्यालय संचालन समिति के अध्यक्ष रामनारायण खंडेलवाल तथा सोहागपुर नगर पंचायत के अध्यक्ष संतोष मालवीय चित्र में दिखाई दे रहे हैं।

बधाई... बधाई... बधाई...

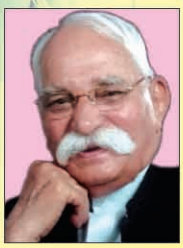
हजारीलाल रघुवंशी

पी.एस. रघु

चौ. चंद्रभान सिंह

उमाशंकर रघुवंशी

शिववरण सिंह रघुवंशी

अजय सिंह

अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा के राष्ट्रीय प्रचार सचिव व सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक, अमृत संदेश के कार्यकारी संपादक और रघुकलश के संपादक श्री अरुण पटेल को सत्यनारायण श्रीवास्तव राज्य-स्तरीय पत्रकारिता सम्मान से सम्मानित होने पर

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

अरुण पटेल को सत्यनारायण श्रीवास्तव राज्य-स्तरीय पत्रकारिता सम्मान से सम्मानित करते हुए मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान। इस अवसर पर जनसंपर्क तथा जल संसाधन मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा और मुख्य सचिव बसंत प्रताप सिंह भी मौजूद थे।

चन्दू रघुवंशी
प्रदेश महामंत्री एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य अभारक्षम

योगेश रघुवंशी

यतीन्द्र रघुवंशी

वीरेन्द्र रघुवंशी

सौजन्य से: चन्दू रघुवंशी, प्रदेश महामंत्री अभारक्षम सागौर, धार

विवाह योग्य युवक-युवती

Name-**Shobha Raghuvanshi**, DOB- 11-04-1984 (Place of Birth- Dhar), Time- 9:15 am, Height- 5ft 2 inches, Qualification- Graduation: B.A.LL.B. & Post Graduation - LLM from National Law Institute University (NLIU), Bhopal, Director at Vansham Classes, Geeta Bhawan Square (Indore) , Family Details- Father – Pratap Singh Raghuvanshi, Advocate, Brothers – Sunil Raghuvanshi, Advocate & Dharmendra Raghuvanshi, Advocate. Father's Gotra- Maina, Mama Gotra- Barod, Residence Adress – 136, Trimurti Nagar, Dhar (Madhya Pradesh). Contact number – 9993071325, 9098713701, 9131257925. Mail - sunilraghuvanshiadv@gmail.com

NAME : **RANI RAGHUWANSHI**, FATHER'S NAME: SH. ASHOK SINGH RAGHUWANSHI, DATE OF BIRTH: 26-12-1989(1:20AM), PLACE OF BIRTH - LUKWASA(SHIVPURI), QUALIFICATIONS- BE(COMPUTER SCIENCE), MBA IN FINANCE(APPEARING,DISTANCE LEARNING), JOB PROFILE: OFFICER IN BANK OF INDIA, POSTED AT KOLARAS BRANCH, HIEGHT: 5.1", WIEGHT 48, COMPLEXION FAIR, GOTARA RIJODIYA, MAMA'S GOTARA: PACHALAIYA, BROTHER'S - 1. RANU RAGHUWANSHI(CA) WORKING IN SFURNA GLOBLE LTD NIGERIA(SA)., 2. RAVI RAGHUWANSHI (BE) COMPETITIVE EXAM PREP., 3. SHAILENDRA RAGHUWANSHI (BA RUNNING), FATHER'S BROTHER - 1. SH. GOVIND SINGH RAGHUWANSHI (RETIRED DISTT. EXCISE OFFICER), 2. SH. RAJARAM SINGH RAGHUWANSHI (RETIRED ADMIN. OFFICER MED. EDUCATION DETT.)-Contact: 9993958897, 8962543704

Name – **Nitin Raghuwanshi**, DOB – 21.11.1987, Education – MDS (People's Group Bhopal), Occupation – Assistant Professor at Hitkarni Dental College, Jabalpur and practicing at own clinic situated at Vijay Nagar Jabalpur., Father's Name – Shri D.S. Raghuwanshi , (Ret. Statistical Officer Health Department, Jabalpur, Contact No – 9425160389), Mother's Name – Smt. Suneeta Raghuwanshi (House Wife), Siblings – One Sister (Married), Gotra – Jhara, Contact No – 9582944186

NAME :- **JITENDRA RAGHUVANSHI**, FATHER :- MR. GOPAL SINGH RAGHUVANSHI, CAST :- THAKUR (RAJPUT), CONTACT :- (MOTHER) 8370045382, CONTACT NO SELF:- 8236842204, DATE OF BIRTH :- 05/03/1985, TIME OF BIRTH :-9:35 PM, PLACE OF BIRTH :- MANDSOUR (MP), GOTRA (SELF):- SONGAR, GOTRA (MAMA JI):- DARID, HEIGHT :- 5'.7", RESIDENCE :- WE HAVE OUR OWN TRIPLE STORY HOUSE :- CHANKYA PURI COLONY 71 B DEWAS, EDUCATION :- B.COM + MBA (WITH FINANCE), WORK (JOB): - ACCOUNTANT AND TAX PRACTINOR, JOB PLACE :- DEWAS (MP), SALARY :- 28500/-, BLOOD GROUP :- A+, E-MAIL :- raghuvanshi.jitu@yahoo.com || FAMILY DETAILS || FATHER :- LATE MR. GOPAL SINGH RAGHUVANSHI, MOTHER :- MRS. SUSHEELA RAGUVANSHI (HOUSE WIFE), OCCUPATION OF FATHER :- RETIRED (POLICE DEPARTMENT), BROTHER :- ONE ELDER BROTHER (MARRIED), SISTER :- TWO SISTER ELDER (MARRIED)

विनयपत्रिका : प्रयोजन, क्रम और कथ्य

वियोगी हरि

गोसाईंजी ने विनयपत्रिका, कराल कलियुग के द्वारा सताये जाने पर, त्रिलोकेश्वर महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी के राज-दरबार में भेजी थी। उस समय आप समस्त मानव जाति के प्रतिनिधि बने थे। पत्रिका कुछ ऐसी प्रभावोत्पादिनी लिखी गई है कि उसे पढ़कर कैसा ही कठोर हृदय क्यों न हो एक बार तो पिघल ही जायेगा। जीवन दैन्य, असामर्थ्य, लघुत्व और स्वामी का पुरुषार्थ, ससामर्थ्य और महत्व विलक्षण दिव्य उद्गारों में अभिव्यक्त किया गया है। अगाध पण्डिस, अतर्क्य अर्थ-गाम्भीर्य, अनुपम उक्ति-चमत्कार, ललित शब्द-सौष्ठव और अनन्त अनुराग-माधुर्य इस ग्रंथ-रत्न में देखते ही बनता है। गोसाईजी की निर्मल आत्मा इसी शुभ्र दर्पण में दिखाई देती है। इसमें कई पद ऐसे मिलेंगे जिनका अनुशीलन करने से तत्कालीन भारतीय परिस्थिति का चित्र मिल जायेगा। भाषा की शिष्टता एवं भावों की गंभीरता इसमें निस्संदेह है परंतु साथ ही सरलता और सरसता का भी अभाव नहीं है। इसके लोकप्रिय न होने का सर्वप्रधान प्रत्यक्ष कारण तो यही है कि इसमें वह चर्चा की गयी है, वह रस बहाया गया है कि जिसके अधिकारी स्वभावतः ही संसार में सदा से उंगलियों पर गिने जाने लायक होते आये हैं। इसमें वह झलक है जिसे देखने को लाख में कहीं एक आंख मिलेगी।

प्रयोजन

इस ग्रंथ के नाम से तो यही जान पड़ता है कि ग्रंथकार ने अपना दुख निवेदन करने के लिए श्रीरामचन्द्रजी को यह निज-बीती पत्रिका लिखी है। सामने न पहुंच सकने के कारण यह चिट्ठी दरबार में पेश कराई होगी। दुख कौन देता था? श्रीमान कलिदेव। जब कलि के मारे गोसाईजी का नाको दम आ गया तब उन्हें महाराज रामचन्द्रजी के दरबार में यह पत्रिका भेजनी पड़ी।

क्रम

कोषकाव्य होते हुए भी विनय-पत्रिका का क्रम बड़ा ही सुंदर है। किसी-किसी के मत से यह ग्रंथ गोसाईंजी के फुटकर पदों का संग्रहमात्र है, पर हमें यह कथन सत्य नहीं जान पड़ता। यह हो सकता है कि कुछ पद जो इसमें ऐसे मिलते हैं, समय-समय पर बनाये गए हों, किन्तु इसकी रचना यथाक्रम ही हुई है। राजा-महाराजा के पास कोई बाला-बाला अर्जी नहीं भेजता। पहले दरबार के मुसाहबों को मिलाना पड़ता है तब कहीं पैठ होती है। इस बात को ध्यान में रखकर गोसाईंजी ने पहले देवी-देवताओं को मनाया है तब कहीं हुजूर में अर्जी पेश की है। सिद्धगणेश श्रीगणेशजी की वंदना से किया गया है। फिर भगवान भास्कर की वंदना की गई है। अनेक जन्म-संचित अविद्या-अंधकार के दूर करने के लिए मरीचिमाली की स्तुति युक्ति-युक्त ही है। फिर पार्वतीबल्लभ जगदगुरु शिव का गुण-गान किया गया है। यहीं से कल्याण का प्रशस्त पथ दृष्टिगोचर होता है। कलि को डराने-धमकाने के लिए भीषणमूर्ति भैरव का भी ध्यान किया गया है। तदनंतर पार्वतनी, गंगा, यमुना, काशी और चित्रकूट का यशोगान किया गया है। चित्रकूट का वर्णन बड़ा ही विशद और हृदयग्राही हुआ है। ''अब चित चेति चित्रकूटहि चलु'' में कवि की उत्कण्ठा प्रतिक्षण बढ़ती दिखाई देती है, अब यहां से हनुमानजी की वंदना आरंभ होती है। यह गोसाईंजी के खास वकील हैं। इनके आगे अपनी सारी व्यथा-कथा खोलकर रख दी है। इनके साथ आप बहुत ही हिलेमिले जान पड़ते हैं। 'ऐसी तोहि न बूझिए हनुमान हठीले' पद में खूब ढिठाई की गई है। इसके बाद लक्ष्मण और फिर भरत और शत्रुघ्न से विनय की है। यहां तक दरबार के सभी मुसाहब साध लिए गये हैं। श्री रघुनाथजी के सामने अपने संबंध की चर्चा छेड़ने के लिए गोसाईंजी ने श्रीजनक-नंदिनीजी को क्या ही युक्ति बताई है। कहते हैं-

कबहुँ अंब, अवसर पाई।
मेरियौ सुधि द्याइबी कछु
करुन- कथा चलाई ।।

'कछु करुन-कथा चलाई' से मानों गोसाईंजी महाकवि भवभूति के स्वर में स्वर मिलाकर करुणारस का प्राधान्य स्वीकार कर रहे हैं। 42 पद पर्यन्त स्तुतिगान करके कवि ने 43वें पद में संक्षिप्त रामचरित का वर्णन किया है। 45वें पद में पुनः रामचन्द्र की वंदना, 48वें में श्रीकृष्ण वंदना, 52वें में दशावतार-कथा तथा 61,62,63 पदों में श्री विंदुमाधव की वंदना की गई है। इस वन्दना-समुच्चय के बाद विनय-पत्रिका का वास्तविक रुप देखने में आता है। कुछ पाठक तो आदि के इन क्लिष्ट पदों से ही दूर भाग जाते हैं, विनय के रसास्वादन से प्रायः विमुख ही रहते हैं। जीव परमेश्वर के सम्मुख अपना दैन्य, दुख-निवेदन, असामर्थ्य आदि किस-किस ढंग से उपस्थित कर सकता है, इसे गोसाईंजी ने यत्र-तत्र अनेक रीतियों से दिखाया है। सुप्रसिद्ध टीकाकार भक्तप्रवर

वैजनाथजी ने विनय की सात भूमिकाएं मानी हैं जिनके अनतर्गत प्राय: विनय-संबंधी सभी पद आ जाते हैं। उदाहरण सहित उनके ये नाम हैं-

दीनता- केहि बिधि देउँ नाथहिं खोरि ?

मानमर्षता- काहे ते हरि, मोहि बिसाइ्यो ?

भयदर्शना- राम कहत चलु, राम कहत-

भर्त्सना- ऐसी मूढ़ता या मन की।

आश्वासन- ऐसे राम दीन-हितकारी।

मनोराज्य- कबहुँक हौं इहि रहनि रहौंगो।

विचारण- केसव, कहि न जाइ का कहिए।

किसी पद में स्वामी का प्रभुत्व, तो किसी में सौहार्द्र या किसी में औदार्य एवं शील, प्रदर्शित किया गया है। किसी पद में जीव का असामर्थ्य, किसी में आत्मग्लानि और किसी में मनोराज्य दिखाया गया है। किसी पद में अपनी रामकहानी सुनाई गई है तो किसी में अत्याचार-पीड़ित मानव-समाज का प्रतिनिधित्व स्वीकार किया गया है। इस प्रकार 276 पद तक पत्रिका लिखी गयी है। पत्रिका पूरी हो चुकी है। अब पेश कौन करे ? फिर हनुमान, शत्रुघ्न, लक्ष्मण और भरत से प्रार्थना की। सेवक होने के कारण अगुवा बनने का किसी को साहस न हुआ। एक दूसरे के मुंह की ओर देखने लगा। पर सबमें लक्ष्मण अधिक ढीठ थे। उन पर रामचन्द्रजी का अपरिमित वात्सल्य-स्नेह था। सो उन्होंने पत्रिका पेश की। यहीं ग्रंथ समाप्त होता है, अंतिम पद यह है-

मारुति मन रुचि भरत की, लखि लषन कही है।

कलिकालहुँ नाथ! नम सों,

प्रतीति प्रीति एक किंकर की निबही है।।

सकल सभा सुनि लै उठी जानि रीति रही है।

कृपा गरीब निवाज की

देखत गरीब की साहब बाँह गही है।

बिहँसि राम कह्यो सत्य है,

सुधि मैं हूं लही है।

मुदित साथ नावत बनी तुलसी

अनाथ की परी रघुनाथ-हाथ सही है।।

दिग्दर्शन

यह तो हम लिख ही चुके हैं कि यह ग्रन्थ एक पत्रिका के रुप में है। गोसाईजी भेजने वाले हैं और श्रीरामचन्द्रजी पाने वाले। एक जीव, त्रिताप-संतप्त जी, परमात्मा के समीप पत्रिका द्वारा अपना दुख निवेदन कर रहा है। वह परमात्मा को स्वामली, महाराजाधिराज, सर्वशक्तिमान और पिता के रुप में देखता है। मुख्यत: इस ग्रंथ में पत्रिका भेजने वाले और पाने वाले का ही वर्णन मिलेगा। मुसाहिबों और दरबारियों की खुशामद कर चुकने के बाद चिट्ठी का मजमून यों शुरु होता है-

राम राम रटु, राम राम रटु,

राम राम जपु जीहा।

राम-नाम नवनेह-मेह को मन,

हठिं होहि पपीहा।।

अभी स्वामी से कुछ भी नहीं कहा। अपनी कलुषित जीभ को ही सिखावन दिया जा रहा है। अप्रत्यक्ष रुप से यह भी एक निवेदन ही है। राम-नाम-स्मरण से क्यों श्रीगणेश किया गया ? क्योंकि सर्वप्रधान साधन यही है-

सब साधन-फल कूप सरित सर,

सागर सलिल निरासा।

राम-नाम-रति स्वाति

सुधा-सुभ-सीकर प्रेमपियासा।।

पपीहा की प्रेमानन्यता और दृढ़ता धारणाकर ''राम-नाम नवनेह-मेह'' के लिए 'पीउ पीउ इस प्रकार पुकार। राम-नाम स्मरण पर कई पद लिख डाले, पृष्ठ के पृष्ठ रंग डाले, तथापि तृप्ति न हुई। इस रस का चसका ही कुछ निराला समझ पड़ा। अंत में यही निश्चित हुआ कि -

तुलसी तिलोक, तिहूँ काल तोसे दीन को।

राम नाम ही की गति जैसे जल मीन को ।।

प्रत्यक्ष ही न देख लो-

पतित-पावन रामनाम-सो न दूसरो।

सुमिरि सुभूमि भयो तुलसी-सो ऊसरो।।

गोसाईजी मन में सोचने लगे, कि चिट्ठी तो लिख रहा हूं, कलिकी शिकायत भी कर रहा हूं, पर तनिक अपनी ओर भी तो देख लूं। यह मेरा जड़ जीव कब से सो रहा है। इसे कुछ खबर भी नहीं कि क्या से क्या हो गया! पहले इसे जगा लेना चाहिए और फिर ठीक-ठीक पूछताछ करके स्वामी से निवेदन करना चाहिए-

जागु जागु जीव लड़? जोहै जग-जामिनी।

देह गेह नेह जानि जैसे धन-दामिनी।।

इस पद में तथा आगे के कई अन्य पदों में 'मायावाद' का आभास मिलता है। शांकर मायावाद में एवं गोसाईंजी के मायावाद में क्या अन्तर है, इसे हम आगे लिखेंगे। पर हाँ यदि यह जीव भगवत्परायण नहीं है और उसे यह जगत 'हरिशून्य' दिखाई देता है तो निस्संदेह वह 'घनदामिनी' और 'जेवरी का साँप' है। अब जीव जागे कैसे? उसे स्वत: प्रबोध तो होने का नहीं, उसमें पुरुषार्थ ही

क्या है? इसलिए-

जानकीदास की कृपा जगावती सुजान जीव,

जागि त्यागि मूढ़ता अनुराग श्रीहरे।

श्री जानकीवल्लभजी की कृपा इस प्रसुप्त जीव को सचेत कर सकती है। उनकी उस कृपा पर पूर्ण प्रतीति होनी चाहिए। कृपालु प्रभु अवश्य कृपा करेंगे। पत्रिका-लेखक को भगवत्कृपा पर पूर्ण विश्वास है। उसे यह अनुभव हो गया है कि-

तुलसीदास प्रभु कृपालु

निरखि, जीव जन बिहालु,

भंजो भवजाल परम मंगलाचरे।'

गोसाईजी ने सोचा कि अब अवसर आ गया है, अपना तुच्छ परिचय दे देना चाहिए। लगे सुनाने-

राम को गुलाम, नाम रामबोबा राख्यो राम,

राम यहै नाम द्वै हौं कबहूं कहत हौं।

-- -- --

लोग कहै पोच, सो न सोच न संकोच मेरे,

ब्याह न बरेखी जाति-पांति न चहत हौं ।।

रामबोला नाम है। राम का गुलाम हूं। दो-एक बार राम-राम कह लेना मेरा काम है। इस पर लोक नीच कहें तो कोई चिन्ता नहीं। मुझे जाति-पांति से कोई मतलब नहीं। किसी के साथ नातेदारी तो जोड़नी नहीं। न ऊधो का देना, न माधो का लेना।

इस आत्म-परिचय में क्या ही निर्द्वन्द्व अवस्था है। इतने से छोटे मजमून के अंदर सारी शाहंशाही भरी है। अस्तु, परिचय दे दिया अब विनय सुनाते हैं। कई पदों में स्वामी की सर्वशक्तिमत्ता और सामर्थ्य एवं उदारता का गुणगान करके आप सच्चे हृदय से कहते हैं-

तू दयालु, दीन हौं, तू दानि,, हौं भिखारी।

हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पापपुंजहारी।।

-- -- --

ब्रह्म तू, हाँ जीव, तू ठाकुर हौं चेरो।

तात मात सखा गुरु तू, सब बिधि हितु मेरो।।

चाहते क्या हैं सो कहिए। कुछ नहीं, केवल-

ज्यों-त्यों तुलसी कृपालु, चरन-सरन पावै

अथवा-

रामचन्द्र चन्द्र तू, चकोर मोहि कीजै।''

सांसारिक लोगों की दृष्टि में तो, वास्तव में कुछ भी नहीं मांगा, पर आपने, गोसाई जी महराज! वह वस्तु मांग ली, जिसे पाकर फिर कोई वस्तु मांगने को शेष नहीं रह जाती। चरण-शरण मिले ही वाली थी कि इतने में मन-मातंग का फिर एक जोर का धक्का लगा है। बना-बनाया मिट्टी में मिल गया। अब क्या मुंह लेकर कुछ मांगा जाय। कहते हैं, अरे मन, तुझे हाथ मल-मलकर पछताना पड़ेगा। मानव शरीर व्यर्थ ही न खो दे। भगवान की ओर तनिक देख तो। अरे दुष्ट! सुन, जैसे कंगाज दिन-रात अपने धन की ही देखभाल में लगा रहता है उसी भांति तू भी अपने स्वामी श्रीरामजी की सेवा किया कर। देख भगवच्चरणविन्दों से विमुख होकर किसी ने सुख नही पाया। अभी सबेरा ही है, चेत जा, अब भी चेत जा-

'तुलसीदास सब आस छाँड़ि करि होहु राम कर चेरों।'

तुझे शांति अच्छी नहीं लगती। तूने कभी विश्राम माना ही नहीं। आत्मानंद भूलकर दिन-रात माया मोह के चक्कर लगाया करता है। तू सुख प्राप्ति के साधन तो करता है पर हाथ कुछ नहीं लगता-

''निज हित नाथ पिता गुरु, हरि सों हरषि हृदय नहिं आन्यो।

तुलसिदास कब तृषा जाइ, सर खनतहिं जनम सिरान्यो।।''

इस मन की ऐसी कुछ मूढ़ता है कि श्रीरामभक्ति रुपी गंगा को त्याग कर ओस की बूंदों की आशा करता फिरता है! यह बड़ा हठी है। बश में तो आता ही नहीं-

''हौं हार्‌यो करि जतन बिबिध, बिधि अतिसै प्रबल अजै।

तुलसीदास बंस होई तबहिं, जब प्रेरक प्रभु बरजै ।।''

पर, मेरी ओर भला प्रेरक प्रभु क्यों देखने लगे? मैं बड़ा ही मंद हूं। हाय! मैने कैसा अनर्थ किया!

महामोह-सरिता अपार महँ, सन्तत फिरत बह्यो।

श्रीहरि-चरनकमल-नौका तजि, फिरि-फिर फेन गह्यो।।

जो हुआ सो हुआ। पतितपावन प्रभु इसकी सारी कलुष-कालिमा क्षण मात्र में धो डालेंगे। यह मुझे अब भी निश्चय है। गजेन्द्र, प्रहलाद, जटायु, अहल्या, अजामिल आदि अनेक घोर पापियों का जिन्होंने उद्धार कर दिया वह दीनबन्धु दीनदयालु मेरी भी जीवन-नौका भव-सरिता से पार कर देंगे। विश्वास तो मुझे सोलह आने है पर विलम्ब क्यों हो रहा है ?

काहे ते हरि मोहि बिसारो ?

जानत निज महिमा, मेरे अघ,

तदपि ननाथ सँभारो ?

यदि तुम अवगुणों पर विचार करोगे तो हो चुका! पर ऐसा तुम करोगे नहीं, क्योंकि यदि तुम अपने सेवकों के दोषों को ही मन में लाते तो बड़े-बड़े धर्मध्वजों को छोड़कर ब्रज के गवाँर ग्वालों के यहां क्यों रहने जाते? शबरी के जूठे बेर क्यों खाते? विदुर का साग क्यों आरोगते? तुम्हारे सम्बंध में तो यही प्रसिद्ध है कि-

निज प्रभुता बिसारि जन के
बस होत सदा यह रीति।
प्रमाण भी मिलता है-
जाकी माया-बस बिरंचि
सिव नाचत पार न पायो।
करतल ताल बजाइ
ग्वाल-जुवतिन्ह सोइ नाच नचायो।

तुम तो कुलीन देखते हो, न पण्डित। ज्ञानी-ध्यानी भी तुम्हारे प्यारे नहीं हैं। तुम्हें कोई प्यारे हैं तो बस गरीब। तुम्हारा नाम ही गरीब निवाज है। शबरी, विभीषण, निषाद और सुदामा कहां के बड़े गुणाढ्य या धनाढ्य थे?

इतना कहते-कहते गोसाईंजी का गला भर आया। प्रेमाश्रु बहने लगे। स्वामी के शील-त्वभाव की ओर आपको प्रेमोन्मत्त मन चला गया। पश्चाताप, लज्जा, विश्वास और मंगलाशा में डुबकियां लगाने लगे। बोले-

''सुनि सीतापति सील सुभाउ।
मोद न मन, तन पुलकि नैनजल,
सो नर खेहर खाउ ।।
-- -- --
खेलत संग अनुज बालक, नित जुगवत अनट अपाउ।
जीति हारि पुचकारि दुलारत, देत दिवावत दाउ।।
-- -- --
निज करुना करतूति भक्त पर, चपत चलत चरचाउ।
सकृत प्रनाम प्रनत जस बरनत, सुनत कहत फिरि गाउ।।
-- -- --
समुझि समुझि गुनग्राम राम के, उर अनुराग बढ़ाउ।
तुलसिदास अनयास राम-पद, पइहैं प्रेम पसाउ।।''

यदि यह चंचल मन केवल राम के गुणाग्राम ही समझ ले, तो हृदय में अवश्यमेव अनुराग का प्रवाह बहने लगे और प्रेमप्रसाद से सहज ही भगवच्चरणारबिन्दों की प्राप्ति हो जाय। यह कैसे कहें कि स्वामी ने इस जीव को भुला दिया है। ऐसा कहना तो कृतघ्नता का भागी बनना है। हे हरे! तुमने तो मुझ पर दया ही की है। देवताओं को भी दुर्लभ मानव शरीर मुझे कृपा कर दे दिया। यह क्या थोड़ी कृपा है? फिर भी मुझे और चाहिये। कृपा कर वह और दे दो। वह क्या, सुनो-

विषय वारि मनमीन भिन्न नहिं, होत कबहुँ पल एक।
ताते सहौं बिपति अति दारुन, जनमत जोनि अनेक।।
कृपा डोरि बनसी पद-अंकुस, परम प्रेम मृद चारो।
एहि बिधि बेधि हरहु मेरो दुख, कौतुक राम तिहारो।।

बलिहारी! क्या ही कौतुक है है! कैसी अनूठी युक्ति है! मनमीन का फंसाना और हिंसा से दूर रहना क्या अच्छी सूझ है! जब यह कौतुक पूरा हो जायेगा तब मैं क्या करुंगा, सो सुनो-

'जानकी-जीवन की बलि जैहौं।
नातो नेह नाथ सों करि
सब नातो नेह बहैहौं।
यह छरभार ताहि तुलसी
गज जाको दास कहैहौं।।'

अब तक जो हुआ सो हुआ अब सचेत हो जाऊंगा। मुझे रामनाम-रुपी चिंतामणि प्राप्त हो गयी है, उसे अब किसी तरह हृदय रुपी हाथ से न गिरने दूंगा।

'स्यामरुप सुचि रुचिर कसौटी,चित- कंचनहिं कसैहौं।'

यह अनन्य प्रतिज्ञा आपने खूब पाली। आप समझ गये थे कि बिना इस अनन्य भावना के जीवन नि:सार और नीरस है। आपको वैदिक यज्ञ रुचते ही न थे। वे सब साधन फोकट जान पड़ते थे। सब साधनों के मूल साधन भगवत्प्रेम का रहस्य आप भलीभांति अवगत कर चुके थे। आपके लिए यज्ञ का रुप यह था-

''प्रेम वारि तरपन भलो, घृत सहज सनेहु।
संसय समिध अगिन छमा ममता बलि देहु।।''

कैसा उच्च आदर्श है! इस यज्ञ पर करोड़ों अश्वमेघ बलि किये जा सकते हैं। इतना ऊंचा विचार, इतनी ऊंची त्यागमयी भावना, उसी महात्मा के हृदय में अंकुरित हो सकती है, जो निम्नलिखित पद गाने का अद्वितीय अधिकारी हो-

'केसव, कहि न जाइ का कहिए!
देखत तव रचना विचित्र अति,
समुझि मनहि मन रहिए।।
सून भीति पर चित्र रंग नहिं,
तनुबिनु लिखा चितेरे।
धोये मिटै न मरे भीति दुख,
पाइय इहि तन हेरे।।
रवि-कर-नीर बसै अति दारुन,
मकररुप तेहि माहीं।
बदनहीन सो ग्रसै चराचर,
पान करन जे जाहीं।।
कोउ कह सत्य झूठ कह कोऊ,
जुगल प्रबल करि मानै।
तुलसीदास परिहरै तीन भ्रम,

सो आपन पहिचानै।।'

इस पद की टीका-टिप्पणी करनी हम अज्ञों की अल्पमति के परे हैं। इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इस पद का सिद्धान्त अद्वैत, द्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि सभी वदों से परे है। अस्तु, इस 'विचारणा' में मस्त रामरंगीले गोसाईंजी 'आत्मबोध' का अर्थ यही निश्चय करते हैं कि बिना भगवत्प्रकाश के उसकी प्राप्ति असंभव ही है-

'तुलसीदास प्रभु तव प्रकास, बिनु संसय टरै न टारी।'

-- - --

'तुलसीदास प्रभु मोह श्रृंखला, छूटिहि तुम्हरे छोरे।'

पर वही प्रश्न फिर सामने आ जाता है। स्वामी की कृपा हो कैसे! यह जानता हूं कि यह संसार अनर्थरुप है। देखता हूं, सुनता हूं, फिर भी अंधा ही बना हूं। दिखाने के लिए धर्म-कर्म भी करता हूं, पर भीतर कपट ही कपट भरा है। कथनी और करनी में पृथ्वी-आकाश का अन्तर है-

'रहनि आन बिधि कहिय आन, हरिपद- सुख पाइय कैसे!'

कपट के आधिक्य से 'भ्रम' साम्राज्य दिन दूना विस्तृत होता जाता है। समस्त संसार भ्रममय भासता है। इस भ्रमाधिक्य के कारण आत्मबोध हो तो कैसे! भ्रम के मिटाने का तो आज तक एक भी उपाय नहीं बन पड़ा। वही किया जिससे यह रोग और भी बढ़े। फिर क्या करुं? कहॉ जाऊॅ? अपना रोना किसके आगे रोऊॅ?

''मैं केहि कहौं बिपति अति भारी। श्रीरघुबीर धीर हितकारी।।
मम हृदय भवन प्रभु तोरा। तहँ बसे आइ प्रभु चोरा ।।
अति कठिन करहिं बरजोरा। मानहिं नहि बिनय निहोरा।।
तम, मोह, लोभ, अहंकारा। मद, क्रोध बोध रिपु मारा।।
कह तुलसीदास सुनु रामा। लूटहिं तसकर तव धामा।।
चिंता यह मोहि अपारा। अपजस नहिं होइ तुम्हारा।।''

काम निकाल लेने का कैसा निराला ढंग है! विपत्ति सुना देने के बाद आत्म-ग्लानि ने फिर आ दबाया। सोचने लगे मैंने समझ लिया, कि रघुनाथजी के चरणों में मेरा प्रेम नहीं है क्योंकि सपने में भी मेरे मन में वैराग्य उदय नहीं हुआ। बिना वैराग्य आये अनुराग कहां? क्योंकि-

''जे रघुबीर-चरण अनुरागे।
तिन्ह सब भोग रोग-सम त्यागे।।''

किया क्या जाय? वह निर्लज्ज मन विषयों की ओर से ऊबता ही नहीं! इसे बार-बार कल्याण-मार्ग का अवलंबन कराया, पर यह उस पर कभी न चला। सदा कुमार्ग का ही पथिक बना रहा। अरे मन! अब भी सचेत हो जा। विचार कर, तूने मनुष्य शरीर पाया है और फिर कहाँ, इस भारतवर्ष में, जहां पास ही पुण्य-सलिला भागीरथी हैं। सत्संग भी अच्छा मिल गया है। पर, अरे कायर! तेरी कुबुद्धि-रुपी कल्पना बिषैले फल फला चाहती है! सावधान हो जा। करुणासिंधु भगवान की शरण में अब भी चला जा-

'जपि नाम करहि प्रनाम कहि, गुन-ग्राम रामहिं धरि हिये।
बिचरहिं अवनि अवनीस, चरन सरोज मन मधुकर किये।।'

यदि यह अवस्था प्राप्त हो जाय, तो सब बन ही न जाय! सो ऐसा सौभाग्य कहाँ? पर निराश क्यों होऊँ! पतित-पावन प्रभु अवश्य अंगीकृत करेंगे, यह मेरी दृढ़ धारणा है। प्रभो! क्या कभी इधर देखोगे! नाथ-

'कबहुँ सो कर-सरोज रघुनायक, धरिहौ नाथ सीस मेरे।
जेहि कर अभय किये जन आरत, बारक बिबस नाम टेरे।।

-- -- --

''सीतल सुखद छांह जेहि कर की, मेटति पाप ताप माया।
निसिबासर तेहि कर सरोज की, चाहत तुलसिदास छाया।।''

इस पद के आगे गोसाईंजी का ध्यान समस्त मानव-समाज पर जाता है। वह अपना ही भला चाहने वाले ज्ञानियों या भक्तों में न थे। उन्हें अत्याचार-पीड़ित जनता का सदा स्मरण रहता था। जगत-प्रतिनिधि के रुप में भगवान के आगे कहने लगे-

'दीनदयालु, दुरित दारिद दुख, दुनी दुसह तिहुँ ताप-तई है।
देव, दुवार प्रकारत आरत, सब की सब सुख-हानि भई है।।'

किस प्रकार जनता इस दुर्दशा को पहुंची, कैसे उसका उद्धार हो सकेगा आदि समस्याओं पर इस पद में खूब विचार किया गया है। अन्त में आपको 'मंगलाशा' का उदय जान पड़ा। श्रीरामजी ने कृपा-दृष्टि कर समस्त मानव-समाज का उद्धार कर दिया। जन समाज के पतन का मुख्य कारण, आपकी राय में, यही जान पड़ा कि 'नास्तिकता' के साम्राज्य से ही यह दुर्दशा हुई है। वास्तव में वे अभागे मनुष्य संसार में नरक रुप होकर जी रहे हैं, जो जन्म-मरण से मुक्त कर देने वाले भगवान के अशरण-शरण चरणों से विमुख हो गये हैं। वे लोग-

'सूकर स्वान सृगाल सरित जन,
जनमत जगत जननि-दुख लागी।'

वे जितनी भी यातना भोगें उतनी थोड़ी ही हैं। पर जो सहस्त्रों पाप करके भी श्रीहरि-शरण ग्रहण करते हैं, उनके लोक-परलोक दोनों सुधर जाते हैं। अब गोसाईंजी को फिर संकोच और आत्मग्लानि आ दबाती है। विषय सुनाने का स्वामी के सामने साहस ही नहीं होता। लज्जा के मारे गड़े जाते हैं। पाखंडों और मिथ्याचारों की प्रत्यक्ष मूर्तियां सामने खड़ी हो जाती हैं। आंखों के आगे अंधेरा छा जाता है। फिर भी अपनी सारी करनी नि:संकोच हो सुना देते हैं। और अन्त में यही कहते हैं कि-

'हारि पर्‌यो करि जतन बहुत बिधि, ताते कहत सबेरो।

तुलसिदास यह त्रास मिटै जब, हृदय करहु तुम डेरो ।।'

हृदय में भगवान कैसे डेरा करेंगे? वहां तो चोरों का निवास है। राम-नाम के प्रबल प्रताप से चोर-डाकू क्षण मात्र में चंपत हो जायेंगे। हृदय-मंदिर निर्मल हो जायेगा। विलम्ब 'डेरा करने' भरका है। यह भी विश्वास है कि 'दिन-हितकारी' स्वामी अवश्य हृदय में वास करें। कठिनता है तो केवल एक ही। वह यह कि-

'रघुपति-भगति करत कठिनाई।

कहत सुगम, करनी अपार,

जानै सोइ जेहि बनि आई।।'

तो क्या अभी तक भगवद्‌भक्ति की प्राप्ति नहीं हुई? तनिक भी नहीं। यदि कहीं श्रीरामजी के चरणों में प्रेम ही लग जाता तो रात-दिन तीनों प्रकार के दुख क्यों सहने पड़ते? जो कहीं श्रीराम-रस मीठा लगा होता तो नव रस एवं छः रस नीरस और फीके पड़ जाते। पर ऐसा नहीं हुआ। क्या मैं कभी इस रहनी से रहूंगा?

''कबहुँक हौं इहि रहनि रहौंगो?

श्रीरघुनाथ कृपालु कृपातें संत सुभाव गहौंगो?

जथालाभ संतोष सदा, काहू सों कछु न चाहौंगो।

पर हित-निरत निरंतर, मन क्रम बचन नेम निबहौंगो।

पुरुष बचन अति दुसह स्रवन, सुनि तेहि पावक न दहौंगो।

बिगत मान, सम सीतल मन, परगुन, औगुन न कहौंगो।

परिहरि, देह-जनति चिंता, दुख-सुख समबुद्धि सहौंगो।

तुलसिदास प्रभु यहि पथ रहि, अविचल हरि-भक्ति लहौंगो।''

कैसा सार्थक विमल वैराग्य है! कर्मयोगियों के काम की कैसी अमूल्य वस्तु है! 'देह-जनित चिंता' से छूटकर 'परहित-निरत' होना देखते ही बनता है। 'जगन्मिथ्या' पुकारने वाले अकर्मण्य पुरुषों को इस पद से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। इस पद को गीता में कथित निष्काम कर्मयोग का खुलासा समझना चाहिए। इस कर्मयोग और वैराग्य के साथ ही सरस भगवद्‌भक्ति का उपदेश सोने में सुगंध का काम कर रहा है। जगत से नाता ही जोड़ना है तो राम के नाते से ही जोड़ना उचित होगा क्योंकि-

'नाते नेह राम के मनियत, पूज्य सुसेव्य जहां लौं।

अंजन कहा आंखि जो फुटै, बहुतक कहौं कहाँ लौं।।''

बिना इस राम-नाते के सारे नाते फिजूल हैं। यश, उच्च वंश, सत्कर्म, ऐश्वर्य, शील और लावण्य, बिना भगवद्‌भक्ति के ऐसे हैं जैसे बिना नमक की साग भाजी! जीवन की सार्थकता समझकर गोसाईंजी ने अटल निश्चय कर लिया कि ''सर्वधर्मान्परित्यज्य'' अनन्य भाव से प्रभु की शरण में जाना ही जीव के लिए श्रेयस्कर है। प्रभु को छोड़कर उन्हें अन्यत्र ठौर-ठिकाना ही कहाँ है? अस्तु, निश्शंक हो आप स्वामी के सम्मुख जाने को तैयार हुए। विनय करने का ढंग सोचने लगे। कुछ समझ में न आया, बोले-

''कौन जतन बिनती करिये?

निज आचरण बिचारि हारि हिय मानि जानि डरिये।।''

पर ऐसा कई बार हो चुका। आशा-निराशा की यह लड़ाई कुछ नई नहीं है। सन्मार्ग पर जाना हंसी-खेल नहीं है। कभी अपने कर्मों पर सोचने से हृदय बैठ जाता है तो कभी स्वामी के शील-स्वभाव पर ध्यान जाने से ढाढ़स बंध जाता है। गोसाईंजी इस पहेली को खूब समझते थे। निराशा के ऊंचे पहाड़ उनके सामने आते अवश्य थे पर वे भावानन्यता-रुपी टांकी से उनके टुकड़े-टुकड़े कर डालते थे। अस्तु बिनती तो करनी ही होगी। बिना रोये माँ भी बालक को दूध नहीं पिलाती और फिर मॉ-बाप के आगे शर्म ही क्या? गोसाईंजी ने पहले मन को ही रास्ते पर लाना ठीक समझा। बार-बार समझाने पर भी उसकी सहज टेव न गई। अरे मन! समय निकल जाने पर तेरे हाथ में एक पछतावा ही रह जायेगा। सहस्त्रबाहु और रावण जैसे प्रतापी राजे भी काल बली से अछूते नहीं बचे फिर तेरी गिनती ही किसमें है? विषय-वासना छोड़ और भगवान के चरणों में चित्त लगा-

'अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़, त्यागु दुरासा जीते।

बुझै न काम-अगिनि तुलसी कहुं, विषय भोग बहु घीते।।'

यह शरीर पानी का बुलबुला है। मिटते देर लगेगी। खाना, पीना, सोना कौन नहीं जानता? पर इसी दिनचर्या में नर-देह की सार्थकता नहीं है-

'काज कहा नर-तनु धरि सार्‌यो?

पर-उपकार सार सुति को, जो सो धोखेहु न बिचार्‌यो।'

सारांश, मनसा, वाचा, कर्मणा हरिभजन और परोपकार किया कर, इसी में तेरा कल्याण है। भजने-योग्य एक श्रीरघुनाथजी ही हैं। उनके समान सेव्य ठाकुर तुझे त्रिलोक और त्रिकाल में भी न मिलेगा। उनके चरणविन्दों की झलक पाने को विरहाकुल हो जा। प्रेमार्द होकर तनिक इस पद का गान तो कर-

'कबहिं देखाइहौ हरि चरन।

समन सकल कलेस कलिमल, सकल मंगल करन।।'

-- -- --

कृपासिंधु सुजान रघुबर, प्रनत-आरति-हरन।

दरस आस पियास तुलसीदास चाहत मरन।। '

इस विरहासक्ति में अपने को लीन कर दे। इस उत्कण्ठा में अपने आपको भुला दे। किस पद के सम्बंध में क्या लिखा जाय कुछ समझ में ही नहीं आता। बुद्धि चक्कर खाने लगती है। जब

प्रेमाधीरता, अनन्यता और अनुरक्ति की ओर चित्त जाता है तो अवाक रह जाना पड़ता है। दस-बीस टूटे-फूटे शब्दों में इतने ऊंचे सिद्धान्तों का दिग्दर्शन कैसे किया जा सकता है। जो हो, इतना विश्वास तो अवश्य है कि समय व्यर्थ ही जा रहा है, इसलिए अंततोगत्वा गोसाईंजी श्रीरामचन्द्रजी की भक्ति में अपने अनंत भाव को अनेक रीतियों से दृढ़ कर रहे हैं। दूसरी ओर आपका चित्त जाता ही नहीं-

'करम उपासन ज्ञान वेद-मत सो सब भांति खरो।
मोहिं तो सावन के अन्धहिं ज्यों सूझत रंग हरो।।'

कहते हैं जो मैं यह कहूं कि मैं रामजी को छोड़कर किसी और का हूं तो मेरी यह जीभ गल जाय। मुझे भला अंगीकार करेगा ही कौन? मुझ निठल्ले से किसका काम निकलेगा? यदि कहो, तुझे चाहिए क्या? अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष के लिए इतनी उछलकूद कर रहा है क्या? नहीं, मुझे यह कुछ न चाहिये। फिर क्या? सुनो-

'खेलिबे को खग मृग तरु, किंकर हवै रावरो राम हौं रहिहौं।
यदि नाते नरकहुँ सचु पैहौं, या बिनु परम पदहुँ दुख दहिहौं।।'

बलिहारी! क्या खूब मांगा! यह इच्छा अनन्य भक्त ही करते हैं। वे खग, मृग, तरु सब कुछ होने को तैयार हैं किन्तु भगवत्-संबंध से। अनेक घाटियां लांघते हुए गोसाईजी अपने कृपालु प्रभु से सिद्धान्त रुपेण निवेदन करने लगे कि अब मुझे अधिक न भटकाओ। अन्त में जब अंगीकार करना पड़ेगा ही तो अभी से क्यों नहीं अपना लेते? मैंने भलीभांति संसार छान डाला है। जितने मालिक मिले वे थोड़ी सी बात में खुश हो जाते हैं और थोड़े में ही नाराज। मेरा कहीं भी निर्वाह नहीं हुआ, मुझे जो कही कोई स्वामी मिल जाता तो मैं तुम्हें इतना कष्ट न देता। पर क्या करुं लाचार हूं। मैं तुम्हें रिझा तो सकता नहीं। मुझमें रिझाने लायक गुण ही क्या हैं। हां एक निरुपमा निर्लज्जता निस्सन्देह है-

''खीझिबे लायक करतब कोटि-कोटि कटु,
रीझिबे लायक तुलसी की निर्लज्जई ।।''

क्षमा करना- मैं तुम्हारे साथ ढिठाई कर रहा हूं। काम तो मैंने खुद बिगाड़ा है और दोष मढ़ता हूं तुम्हारे माथे! मेरे समान मूर्ख और अभागा दूसरा कहीं मिलने का नहीं। अरे जिससे प्रीति जोड़ने को योगीजन भी उपाय करते हैं, उससे जैसे-तैसे जो प्रीति जुड़ गई थी, उसे भी मैं तोड़ बैठा हूं। मैं बड़ा नीच और कृतघ्न हूं। इसलिए-

''रखिये नीके सुधारि नीच को डारिये मारि,
दुहूँ ओर की बिचारि अब न निहोरिहौं।
तुलसी कही है सांची रेख बारबार खांची,
ढील किये नाम-महिमा की नाव बोरिहौं।।''

यदि कहो, कि जा, मुझे अपना लिया है तो मैं यों मानने वाला नहीं। अंगीकृत सेवक के लक्षण ही कुछ और होते हैं। नाथ! उसकी दशा ही विलक्षण हो जाती है।

''तुम अपनायो तब जाहिनहौं, जब मन फिरि परि है।
जेहि सुभाव विषयनि लग्यो तेहि,
सहज नाथ सों नेह छाड़ि छल करिहै।।
सुत की प्रीति, प्रतीति मीत की, नृप ज्यों डर डरि है।
अपनो सो स्वास्थ्य स्वामी सों,
चहूं बिधि चातक ज्यों, एक टेक ते नहिं टरिहैं।।
हरषिहै न अति आदे, निदरे न जरि-मरि है।
हानि लाभ सुख-दुख सबै समचित हित,
अनहित कलि कुचाल परिहरि है।।
प्रभु गुन सुनि मन हरषिहै नीर नैननि ढरिहै।
तुलसीदास भयो राम को बिस्वास,
प्रेम लखि आनंद उमंगि उर भरि है।।''

सो यह दशा अभी कहां प्राप्त हुई? मुझे भूल भुलैया में न डालो मेरे नाथ! मैं जैसा भी हूं, हूं तो आखिर तुम्हारा किंकर। मुझे छोड़ो मत। हे शरणागत-पाल! अपने विरद की लाज रख लो। मेरी ओर से आंख न फेरो। तुम्हारे त्याग देने पर मैं ''विनय पत्रिका की टीका'' से उद्धृत अंश कहीं का न रहूंगा। मेरा भला तुम्हारे ही हाथ से होगा। जैसे-तैसे अंगीकार कर ही लो। अब संसार का दारुण दुख सहा नहीं जाता-

शरण की भिक्षा मांगते-मांगते गोसाईंजी 'पत्रिका' लिखना समाप्त करते हैं। अब लिखने को रहा ही क्या? अस्तु चिट्ठी लिफाफे में बंद किये बिना ही भेज दी गई। खुली चिट्ठी दरबार में पहुंची। मुसाहिब पहले से ही सधे-सधाये थे। लक्ष्मणजी ने सेवा में पेश कर दी। श्रीरघुनाथजी ने पत्रिका पढ़कर तुलसीदास के संबंध में पूछा, कि क्या यह सब बात ठीक है? एक स्वर से सभी बोल उठे कि हां-हां, हम लोग उसकी रीति-पद्धति खूब जानते हैं। दुष्ट कलि ने निस्संदेह उसे असह्य यातना दी है। फिर भी उसने आपके प्रति अपनी भावानन्यता नहीं छोड़ी। यह सुनकर भगवान मुस्कराये और बोले-ठीक है, मुझे भी उसकी खबर है-

''बिहंसि राम कह्यो, सत्य है, सुधि मैं हूं लही है।''

बस, फिर क्या काम बन गया-

''मुदित माथ नावत बनी तुलसी अनाथ की,
परी रघुनाथ-हाथ सही है।''

- तुलसी मानस भारती से साभार

--------■ ■--------

मोटापा एक विचारशील प्रसंग है

डॉ. एच. सी. नवल (इंग्लैंड)

मोटापन सचमुच आजकल मानव स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर और विचारशील प्रसंग बन गया है। यह मनुष्यों के बदन पर अभद्र और अवांछनीय पहनाव है जो हमारे शरीर के भीतर प्रत्येक अंग के आवश्यक कार्यों में बाधा पहुँचाकर अनेक बीमारियों को पैदा करता है और प्राय: जीवन के कई वर्ष चुराकर समय से पहले ही समाप्त कर देता है।

पिछली पीढ़ियों के लोग मोटापन के विनाशिक विषय से अनभिज्ञ थे, समाज में मोटे लोगों को समृद्ध, सुखी और आदरणीय होने का प्रतीक माना जाता था और दूर से देखते ही झुककर सम्मान करने लगते थे। आधुनिक रिसर्च के माध्यम से यह पता चलता है और सिद्ध हुआ है कि मोटापन निसंदेह एक संगीन बीमारियों का भंडार है, धीरे धीरे बढ़कर समाज में अभिशाप बनकर फैल गया है, और यह जानकारी हम सबको सचेत और सतर्क करती है कि मोटापन से कैसे दूर रहकर स्वास्थ्य को किस तरह सबल और सुरक्षित रखा जा सकता है।

मानव के मोटापे का माप BMI उसके वज़न किलोग्राम में और ऊंचाई मीटर से Divide करके लगाया जाता है, इसे BMI कहते हैं। जैसे BMI = वज़न (KG) / ऊँचाई (Meter)। नार्मल BMI 18.5 to 25 के बीच में होती है इससे अधिक होने से लोग मोटापन की केटेगरी में आते हैं। और ये दो प्रकार की होती है मध्यम 30 से 40 और गंभीर 40 से 50 तक। आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी की रिसर्च द्वारा साबित हो चुका है- कि मध्यम मोटापे वाले मनुष्य अगर मोटापा कम न करें तो वह अपनी उम्र के पाँच वर्ष खो बैठते हैं, और गंभीर मोटापे वालों को दस साल तक की उम्र का बलिदान करना पड़ता है।

मोटापा बढ़ने के कारण

देखा जाये तो मुख्य कारण हैं- भोजन अधिक और व्यायाम कम। हम सब जानते हैं कि भोजन हमारे शरीर को कितना आवश्यक है , पर भूल जाते हैं कि ज़रूरत से अधिक और अनुयुक्त भोजन कितना नुकसानदायक हो सकता है। प्रकृति का नियम है कि जिस तत्व से हमारा शरीर और स्वास्थ्य बनता है उसकीअधिकता हानिकारक भी हो सकती है। भोजन से मुख्यता - कारबोहाइड्रेट, शुगर, फैट द्वारा शरीर को ऊर्जा (एपशीसू) प्राप्त होती है, लेकिन स्वास्थ्य वर्जित अधिक भोजन से पैदा हुई अतिरिक्त अनावश्यक ऊर्जा चर्बी में बदलकर शरीर की ब्लड वेसल्स और अंगों में जमा हो जाती है जो मोटापन बढ़ाती है और मुख्य अंगों के कार्य में बाधा डालने का कारण होती है।

व्यायाम लोग आजकल बहुत कम या नहीं के बराबर करते है। वाहनों में सफर करना, दफ्तरों में कुर्सी पर बैठना, कम घूमना फिरना और अधिक रिलेक्स करना एक दिनचर्या बन गई है जो मोटापे को निरंतर बढ़ाबा देती है। होटलों, रेस्टोरेंट्स और सड़कों पर प्रोसेस्ड जंक फूड और शुगरी ड्रिंक्स लोगों को जितना आकर्षित करते है उतने ही हानिकारक एवं मोटापा बढ़ानेऔर स्वास्थ्य बिगाड़ने के लिए जाने जाते हैं। इसके विपरीत यदि देखा जाये तो आर्मी या पुलिस में जवान लोग एक्टिव रहते हैं उन्हें मोटापन की कभी कोई शिकायत नहीं होती।

मोटापे का दुखद प्रकोप स्त्री पुरुष, बच्चे जवान और बुजुर्ग सभी को जकड़ लेता है और इससे होने वाली गंभीर बीमारियां केवल मरीज़ को ही नहीं सारे परिवार, समाज, को दुखदाई हो जाती हैं। जहाँ सभी लोगों की बीमारी का फ्री इलाज सरकार की जिम्मेदारी होती है- एक बड़ी समस्या बन जाती है। उदाहरण तौर पर आजकल ब्रिटेन जैसे समृद्ध देश को भी बढ़ती हुई अस्वस्थ जनता को सँभालना एक बड़ा बोझ बन गया है।

मोटापे से होने वाली बीमारियां

डायबिटीज़ टाइप 2 - मोटे सरीर वाले लोग प्राय: डायबिटीज़ के शिकर हो जाते हैं। पेन्क्रीआज़ के सेल में परिवर्तन होता है और हार्मोन इन्सुलिन का ररिजिस्टेन्स बढ़ने से ब्लड शुगर बढ़ जाता है। बज़न कम करने तथा डाइट में संशोधन करने, शुगर, स्मोकिंग का निषेध, नियमित मेडीसन लेते रहने, मेडीकल चेक-अप और व्यायाम करते रहने से बीमारी कंट्रोल की जा सकती है तथा काफी सुधार हो सकता है।

हार्ट की बीमारियाँ - मोटापन हार्ट के लिए एकदम खतरनाक होता है। ब्लड वेसल्स और हार्ट में चर्बी जमाँ होने से ख़ून का प्रवाह कम हो जाता है, हार्ट को कठिन कार्य करना पड़ता है-जिससे कोरोनरी आर्टरी की बीमारी, एन्जाइना, हार्ट्अटैक और हार्ट फेल होने के चांसेज बढ़ जाते हैं। निवारण के लिए ब्लड- प्रेशर , कोलेस्ट्राल कम करना चाहिए, डाइट में

परिवर्तन लाना, स्मोकिंग बंद करना, नियमित रूप से व्यायाम तथा मेडीकल चेक कराते रहना अतिआवश्यक है।

स्ट्रोक - मोटापा से खून की नलियाँ संकीर्ण हो जाती हैं और ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है और ब्रेन में खून का प्रवाह कम होने से या बंद होने से ऑक्सीजन नहीं मिल पाती है जो की ब्रेन के लिए बहुत आवश्यक होती है और कुछ ही मिनिट में ब्रेन फेल होने के चांसेज बढ़ जाते है जिसे स्ट्रोक बोलते हैं। ब्रेन को स्वस्थ बनाये रखने के लिए ब्लड- प्रेशर,और कोलेस्ट्रॉल को कण्ट्रोल में रखना, व्यायाम करना, स्मोकिंग छोड़न , टेंशन कम और हार्ट को स्वास्थ्य बनाये रखना बहुत ज़रूरी होता है।

कैंसर - अधिक मोटापा अक्सर कोलन, ब्रेस्ट, किडनी, एसोफैगस, गॉलब्लेडर में कैंसर की बीमारी को पैदा करने में बढ़ाबा देता हैं। रोक थाम के लिए बजन बढ़ने को रोकें, डाइट और व्यायाम के ऊपर विशेषध्यान दें।

इनके अतिरिक्त और भी कई शारीरिक तथा मानसिक बीमारियां मोटापे से जुड़ी हुई हैं जो मनुष्यों के लिए काफी दुखदायक साबित होती हैं -जैसे ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्रॉल बढ़ना, गॉलब्लेडर स्टोन,आर्थराइटिस, गाउट, लिवर की बीमारियां,अस्थमा, डिप्रेशन- आदि। इन सब के निवारण और रोकथाम के फलस्वरूप मोटापा कम करने ले लिए हमें अपनी जीवन-शैली में आवश्यक परिवर्त्तन लाकर अच्छी आदतें विशुद्ध आचरण और मूल्य सिद्धांतों को अपनाना बहुत ज़रूरी है, जैसे--

भोजन, पौष्टिक एवं गुणवत्ता का हो, क़्वालिटी और क़्वान्टिटी का विशेष ध्यान रखें, जहां तक हो सके वेजिटेबिल्स फ्रूट्स, सलाद और एग्स / फिश स्तेमाल करें- यही फूड वज़न घटाने के लिए अच्छा समझा जाता है। नियमित व्यायाम, घूमना, और मैडीटेशन बहुत आवश्यक है। खुलकर हॅसने की आदत डालना, पूरी नींद सोना,और तामसिक पदार्थो (स्मोकिंग, ज़रदा तम्बाखू, शराब की अधिकता) का त्याग करें। टेंनशन और बोरडम कम,और दूषित वातावरण से जहाँ तक हो सके दूर रहने की कोशिश करें। पर्सनल और जनरल हाईजिन पर विशेष ध्यान दें। नियमित रूप से मेडीकल चेक-अप करबाते रहें। अपने माईन्ड में दृढ़ संकल्प पैदा करें, और अद्वितीय धार्मिकता को अपनायें, तथा ईश्वर आस्था में अटल विश्वाश बनाये रखें --इत्यादि! तभी हम स्वास्थ्य जैसी प्रकृति की सौंपी हुई इस अनमोल सौगात का पूर्णता: लाभ उठा सकेंगे!

--------■ ■--------

रामायण भजन

हमें निज धर्म पर चलना सिखाती रोज रामायण
सदा शुभ आचरण करना सिखाती रोज रामायण
जिन्हें संसार सागर से उतरकर पार जाना है
उन्हें सुख से किनारे पर लगाती रोज रामायण
हमें निज धर्म पर.....
कहीं छवि विष्णु की बाकी कहीं शंकर की है झांकी
हृदय आनन्द झूले पर झुलाती रोज रामायण
हमें निज धर्म पर.....
सरल कविता की कुंजो में बना मंदिर है हिन्दू का
जहां प्रभु प्रेम का दर्शन कराती रोज रामायण
हमें निज धर्म पर.....
कभी वेदों के सागर में कभी गीता की गंगा में
कभी रस बिन्दु में मन को डुबाती रोज रामायण
हमें निज धर्म पर.....
कभी गंगा कभी यमुना कभी सरजू नहलाती
सरल रस बिन्दु से मन को लुभाती रोज रामायण
हमें निज धर्म पर चलना सिखाती रोज रामायण।

भूल न बन्दे

भूल न बन्दे माता पिता को जिसने तुमको जन्म दिया
जीवन तेरा जिसने संवारा पाला पोसा बड़ा किया।
रख नौ मास कोख में तुझको पीड़ा सह जग दिखलाया
ममता का आँचल दे मां ने फूल सा तुझको महकाया।
रातों की दी नींद चैन दिन का अपना सब कुछ वार दिया
भूल न बन्दे माता पिता को जिसने तुमको जन्म दिया।
तुम्हें सुलाया सूखे में ही खुद गीले में सोई थी
चोट लगी जब तुमको सोचो आंखें मां की रोई थीं।
तुम्हें लगा सीने से जिन्होंने अपना सब कुछ वार दिया
भूल न बन्दे माता पिता को जिसने तुमको जन्म दिया।
खून पसीना किया एक की जीवन भर ही मेहनत
तुमको दी हर खुशी आज जब तुम बने सर्व-समर्थक।
भूल न बन्दे माता पिता को जिसने तुमको जन्म दिया
जीवन तेरा जिसने संवारा पाला पोसा बड़ा किया।

श्रीमती सरला रघुवंशी
सी-150 शाहपुरा, भोपाल
मोबा. 9755177963

समय

धन ने और समय ने मिलकर
एक गुप्त योजना बनाई
कभी डगर का छोर न आया
दोपहरी से शाम न आयी
फुसलाकर ले गयी हवाएं
खुशबू को फूलों के घर से
गंध रास्ता पूछ रही अब
घर का पत्थर दिल पतझर से
कली हुई पतझर की बंदी,
झुलस गई सांसें खुशबू की
नरम गगन की नीलाई में
उफन रही हैं लपटें लू की
पुरवाई के आश्वासन पर,
मुस्काई ज्यों ही तरुणाई
आग बबूला सूरज चमका,
बगिया की बगिया झुलसाई
पतझर की बातों में आकर
मिलनसार दुधमुंही जवानी
गई चांद को छूने, पर अब
करती, कांटों की मेहमानी।
गई योग्यताएं दिखलाने
आकांक्षाएं तूफानों को
जो बगिया का हृदय रौंदकर
शीश झुकाते पाषाणों को।
सपनों ने ऐसे मौसम में,
ली पहली पहली अंगड़ाई
छोड़ चुकी जब मन का आंगन
आशा की अंतिम परछाई।
पथ ने मेरे आदर्शों को
बहका कर ऐसा उलझाया
जितना आगे बढ़े, सरकती
गयी दूर रुपहली छाया
जिसके लिए तपाया यौवन
वह विचार भी छोड़ रहा है
किसी प्रेम छाया के पीछे
मुर्दा निश्चय दौड़ रहा है।
आंसू की पूंजी बिखेर दी
पर कुबेर को दया न आई
फिर भी उम्र बजाती जाती,
दुखती सांसों की शहनाई।

विकार

ओ तुम विकार। किस किस प्रकार
वंचित मनुष्य की द्विविधा पर
अवसर पाकर करते प्रहार।
ओ तुम विकार के अंधकार।
तभी महूं मैं अकस्मात्
क्यों स्फुरण हुआ कंपकंपी उठी?
चेतना कौंधती सी लगती
ज्यों शिखा सिहर कर झंपी उठी।
लम्बे सूने वीराने पथ पर
छाया सी मंजिल लगती
जिसकी मृग तृष्णा में पड़कर
मेरी नजरें आश्रय तकती
मेरा दिल झूम झूम जाता
किसने ये बाहें फैला दीं
किसने यह सब्ज बाग लाया
दिल के भी बहुत पास लादी
अंगारों पर खिलते दिखते
अब नवल कुसुम नूतनबहार।
मेरा दिल बहुत-बहुत गहरा है
चोर न पहुंच सके जिस तक
तन की सीमा पर पीड़ाएं
पहरा देतीं जल कर धक् धक्।
मुझे पाश में रोक न पाया
मद न मनोरम तेरा है
ओ तू विकार जड़ अंधकार
तुम पर हाबी ये रे उज्जवल
प्रबल गतिमय विचार।
तेरी मस्ती पर रे विकार
मेरी हस्ती का घेरा है।
मेरा दिन बहुत बहुत गहरा है।

डॉ. देवकीनंदन जोशी
संपर्क-मो. 8720031001,
फोन-0755-2557428

हर मानव तुमको कलुषित है

चाहे तुम बन जाओ सोना
या मालिक के बने खिलौना
अगर हृदय में द्वेष भरा है
हर मानव तुमको कलुषित है।
सज्जनता को तन में ढक कर
मृदुता को वाणी में रखकर।
ताज मनुष्यता के रख रख कर
केवल ढोंग ही ढोंग रचे या
हिय को तुम हत्यारा करके
अलिखलेश्वर को न्यारा धर के
बने रहोगे तब तक ऐसे
जब तक मन मंदिर दूषित है
चाहे तुम बन जाओ सोना
या मालिक के बनो खिलौना
अगर हृदय में द्वेष भरा है
हर मानव तुमको कलुषित है।
मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे और
गिरजाघर या चर्च बना दो
चाहे जितने ऊंचे-ऊंचे
पाषाणों के ढेर लगा दो
दीन-दुखियों गले काटकर
मानवता का होम लगाकर
जिन्दा रखकर मारे इनको
कर्जो के फन्दे लटका कर
सफेदपोश खादी की टोपी
मखमल की है लगी लंगोटी
करें याचना इनसे हम तो
सुनें सैकड़ों खरी-खोटी-खोटी
माला से तुम उन्हें रिझाके
अमृत में विष को पिघलाके
ऐसा फिर तुम कभी न सोचो
परमेश्वर तुमसे हर्षित है
चाहे तुम बन जाओ सोना
या मालिक के बनो खिलौना
अगर हृदय में द्वेष भरा है
हर मानव तुमको कलुषित है।

भूत वर्तमान और भविष्य

भूतकाल का होम लगाकर भावी की तुम पूजा छोड़ो।
वर्तमान में करो साधना और अधर्म से आगे दौड़ो।।
भविष्य में भरोसा न कर बीत गया सो भूत।
वर्तमान में जागकर तू बन जा पूत सपूत।
भूतों से पिण्ड छुड़ाने को मार भविष्य की फूंक।
वर्तमान में पढ़-पढ़ मंत्र तू जोर जोर से फूंक।

इंजी. शम्भू सिंह ''अजेय''
गुना, म.प्र.
मो. 9425762471

शब्दों का न्याय निवेदन

(कठुआ प्रकरण एवं उसकी राजनीति प्रेरित प्रेस कवरेज से दुखी कवि हृदय के शब्द हुंकार कर न्याय मांग रहे है)

शब्द वृष्टि से क्यों न तृप्त हुआ मेरा मन,
ये अब तक क्यों आलोड़ित है,
वाणी वरद का जब मिलना था सुभद्रा कुमारी की हुंकार ,
जब चंदर बरदाई की वीरगाथा की थी दरकार,
फिर क्यों मौन है लेखनी, और हुआ चहु ओर शब्दों का व्यापर,
अमर्यादित शब्द, अप्रकाशित अर्थ, असम्पादित दर्द ,
फिर क्यों बन गये देश हृदय का संताप ।

फिर क्यो नन्ही कलियो को मसला जाना,
फिर क्यों बहार आने से पहले खिज़ा का आ जाना,
फिर क्यो बना वजह तेरे -मेरे मे बट जाने का ।

हे शब्दवंश के हरकारों,
आज
लेखनी को सीमित मत करना,
कुछ सीमाएं प्रतिबंधित थी शब्दों को,
आज उन सीमाओ को लांघित करना होगा,
सरस्वती के वरदहस्त का मान बढ़ाना होगा,
हृदयबेधी काव्य रच शब्द विधा की आन बचाना होगा,
आज मुझे शब्द तिलस्म का वर दे माँ,
आज नव अर्थ रच रच भाषा का सम्मान बढ़ाना होगा,
कुम्भकुर्ण निंद्रा में सोये मानस को जगाना होगा ।

अन्यथा एक दिन ऐसा आएगा, शब्द अमुखर हो जायेंगे,
अर्थ प्रताड़ित हो जाएंगे,
भाषा खुद शरमायेगी,
प्रज्ञा गीत न गायेगी ।
पुण्य सलिल भारत भूमि पर,
शब्दों का न्याय निवेदन सुन लेना,
जिस दिन न्याय करेंगे अर्थ शब्दों का ,
उस दिन मन मेरे
एक नये राम- राज्य का अभिशासन कर लेना
उस दिन जागी आँखों के सपनों को रच लेना,
नव लेखनी से एक नया संसार गढ़ लेना,
शब्दों को फिर अनुप्राणन करना ,
मन के गर्भगृह में एक प्रतिमा का स्थापन करना,
भावो से अर्चन करना,
शब्दों से पूजन करना,
इस श्रापित मंदिर की निठुर साँझ को भूल,
फिर जीवन को आमंत्रित करना ।

फिर शब्द बहेंगे झरनो से,
फिर अर्थ खिलेंगे सुमनों से ,
फिर भाषा की आँधी आयगी,
फिर खग कलरव गूँजेंगे,
फिर रामायण रचना तुम,
फिर नया बसेगा त्रिपुर-निलयम्,
फिर नयी सजेगी सृष्टि ,
फिर नया ब्रह्मनाद होगा,
फिर जागेगी विश्वकर्मा की आदिशक्ति,
फिर मंदिर का उन्नयन होगा ।
न कठुआ होगा, न उन्नाव होगा,
मेरे देश में बस प्रेम का
अभिनन्दन होगा ।

संजय सिंहो 'निमेष'
ई-1/149, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल

ज्योतिष्य कलश

ज्योतिर्विद विजय मोहबे
ई-2/333, अरेरा कालोनी, भोपाल म.प्र.
मो. 9827331388

जुलाई माह-2018

प्रमुख तीज त्यौहार- ता. 1 गणेश चतुर्थी व्रत, ता. 6 शीतलाष्टमी, ता. 9 योगिनी एकादशी, ता. 12 श्राद्ध अमावस्या, ता. 16 विनायकी चतुर्थी, ता. 21 भड़ली नवमी, ता. 23 देवशायनी एकादशी, ता. 30 श्रावण सोमवार।

मेष- शुभ कार्यो पर धन खर्च होगा। दूसरों की सहायता से कार्य सम्पन्न होंगे। शासकीय कार्यो में कोई बाधा हा सकती है, सतर्क रहें। मनोबल बनाये रखें। संतान के कार्यो की चिंता रहेगी। आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी। आकस्मिक परिवर्तन के योग बनेंगे।

वृषभ- अध्ययन व शिक्षा के क्षेत्र में आपकी लगन का लाभ मिलेगा। युवा वर्ग में रोजगार हेतु प्रतियोगिता परीक्षा हेतु बहुत परिश्रम करना पड़ेगा। व्यापारी वर्ग में उत्साह रहेगा। पुराने मित्रों से मुलाकात सुखद रहेगी। यात्रा से बचें।

मिथुन- सामाजिक कार्यो की ओर रुझान रहेगा। सम्मान की प्राप्ति होगी। वृद्ध माता-पिता के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। युवतियों को नवीन वस्त्राभूषण का लाभ मिलेगा। किसी भी कार्य में जिद करने से हानि होगी। वाहन का सुख रहेगा।

कर्क- आर्थिक कठिनाइयां दूर होंगी। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे। कामकाजी महिलाओं को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। व्यापार-व्यवसाय के विस्तार की योजना बनेगी। अनायास यात्रा के योग बनेंगे। व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें।

सिंह- भोग विलास की वस्तुओं पर धन खर्च होगा। शत्रु वर्ग हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। थोड़ा मानसिक असंतोष रहेगा। धर्म-कर्म का लाभ मिलेगा। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। राजनीति के क्षेत्र में मान-सम्मान बढ़ेगा। चोट लगने का भय रहेगा।

कन्या- मनोरंजर, भ्रमण के अवसर बनेंगे। शासन-सत्ता के कार्यो में विलम्ब रहेगा। खानपान पर ध्यान दें। उदर रोग की संभावना रहेगी। प्रेमी-प्रेमिका का मिलन होगा। पूंजीनिवेश के लिए समय अनुकूल है। नया वाहन क्रय करने की योजना बनेगी।

तुला- भूमि-भवन के कार्यो पर धन खर्च होगा। परिवार में कोई शुभमंगल कार्य बनेगा। जनसंपर्क से लाभ मिलेगा। नवीन योजनायें बनेंगी। विवाह योग्य युवक-युवतियों के रिश्ते की बात चलेगी। कोई पुराना विवाद फिर परेशान करेगा।

वृश्चिक- अदालती कार्यो में परेशानी व आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। शासकीय कर्मचारियों को ट्रांसफर या यात्रा के योग बनेंगे। व्यापार आदि के विस्तार हेतु कर्ज लेने की व्यवस्था करनी पड़ेगी। जल्दबाजी से बचें।

धनु- कार्यो में व्यस्तता बढ़ेगी। वाहन आदि के कार्यो पर धन खर्च होगा। दूसरों की कही बातों पर एकदम विश्वास न करें। गलतफहमी से हानि होगी। अतिथि आगमन के योग बनते हैं। विद्यार्थी वर्ग में उत्साह रहेगा। पूर्व में किये गये कार्यो का उत्तम फल प्राप्त होगा।

मकर- जिन्दगी में निराशा से बचे आध्यात्मिकता से लाभ मिलेगा। मीडिया, फिल्म, नाटक से संबंधित कलाकारों को कार्यो में सफलता प्राप्त होगी। शेयर, सट्टा आदि में पूंजीनिवेश करने से हानि होगी। स्वास्थ्य को लेकर चिंता बढ़ेगी।

कुंभ- आजीविका को लेकर भ्रम की स्थिति रहेगी। पूर्व परिचित से कामकाज में सहायता प्राप्त होगी। प्रेम पक्ष से संतुष्टि रहेगी। स्वार्थी तत्वों से सावधान रहें। कोई आपसे ठगी कर सकता है। बाहर गये रिश्तेदार या मित्र के कुशलक्षेम का समाचार प्राप्त होगा।

मीन- व्यवहार कुशलता का लाभ मिलेगा। नये अनुबंधों में सफलता प्राप्त होगी। व्यापार में पार्टनरशिप से बचें। रोजगार हेतु दूरदराज की यात्रा करनी पड़ेगी। मधुमेह या दिल के रोगियों को अनायास कष्ट बढ़ेगा। सावधान रहें। विवाह योग्य कन्याओं का रिश्ता बनेगा।

अगस्त माह-2018

प्रमुख तीज-त्योहार- ता. 7 कामिका एकादमी, ता. 9 प्रदोष व्रत, ता.11 हरियाली अमावस्या, ता. 15 नागपंचमी, ता. 22 पुत्र एकादशी, ता. 23 प्रदोष व्रत, ता. 26 श्रावणी पूर्णिमा, ता. 31 गोगा पंचमी।

मेष- पारिवारिक सुख-शांति रहेगी। कार्यो में गति बढ़ेगी। व्यापार-व्यवसाय में लाभ के अवसर बनेंगे। रिश्तेदारों का कार्यो मे सहयोग रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वालों की पदोन्नति का लाभ प्राप्त होगा। आमदनी में वृद्धि होगी। गुप्त शत्रु सक्रिय रहेंगे, सतर्कता बरतें।

वृषभ- शुरुआती परिस्थितियों को अनुकूल करने में समय व धन खर्च होगा। दूसरों को दोष देने की बजाए स्वयं ठोस निर्णय लेकर कार्य को सफल बनायें। स्त्री पक्ष से कुछ मनमुटाव रहेगा। प्रेम प्रसंगों में अपनी मर्यादा व समाज का ध्यान रखें।

मिथुन- दूसरों की जमानत या उनकी सिफारिश करने से बचें। व्यर्थ धोखा होने का भय रहेगा। पैतृक सम्पत्ति का लाभ मिलेगा। भौतिक वस्तुओं की खरीदी पर धन खर्च होगा। युवा वर्ग को रोजगार की दिशा में सफलता प्राप्त होगी। आर्थिक परिस्थितियों में सुधार रहेगा।

कर्क- कुसंगति से बचें। व्यर्थ के लांछन लग सकते हैं। आपका स्वास्थ्य थोड़ा ढुलमुल रहेगा। साहित्य व लेखन के क्षेत्र में सम्मान या पद की प्राप्ति होगी। आय-व्यय बराबर रहेंगे। ससुराल पक्ष से अनबन रहेगी। कामकाज में धीरे-धीरे अनुकूलता बनेगी।

सिंह- भावुकता व लालच से बचें। नई योजनाओं में गोपनीयता बरतें। अधिकारी वर्ग से तालमेल बनेगा। कायक्षेत्र में नई जगह पदस्थापना के योग। नेतृत्व की भी संभावना है। शनि की आराधना

से लाभ की प्राप्ति होगी।

कन्या- विश्वास के साथ प्रेरणात्मक कार्यों में लिप्त रहेंगे। गुरु की सेवा व आध्यात्मिकता से बिगड़े कार्य बनेंगे पारिवारिक संबंधों का विकास होगा। दूसरों की मदद पर धन खर्च होगा। स्त्री वर्ग में उत्साह रहेगा। रोजगार मिल सकता है।

तुला- पारिवारिक समस्यायें हल होंगी। जोखिम के कार्यो से बचें। मनोरंजन-भ्रमण के अवसर बनेंगे। स्थाई सम्पत्ति क्रय करने हेतु अनुकूल समय है। संतान के कार्यो पर धन खर्च होगा। आपके व्यवहार से सभी प्रसन्न रहेंगे।

वृश्चिक- नेत्र कष्ट की संभावना रहेगी। वस्तु-विशेष के गुमने या चोरी जाने का भय रहेगा, ध्यान रखें। व्यवसाय के साथ-साथ आप सहायक कार्य या व्यवसाय में भी रुचि रखेंगे, सफलता मिलेगी। शनि की साढ़े-साती के कारण अनायास कष्ट होगा।

धनु- राजनीति के कार्यो में भागदौड़ रहेगी। परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। पत्नी की मदद से कार्य बनेगा। परीक्षा- प्रतियोगिता हेतु कड़ी मेहनत का लाभ मिलेगा।घरेलू उपकरणों की खरीदी में धन खर्च होगा। मित्र से मिलन होगा।

मकर- सामाजिक उत्तरदायित्व बढ़ने से चिड़चिड़ापन रहेगा। कामकाज के लिए दौड़-भाग करनी पड़ेगी। सम्पत्ति विवाद से बचें। बुजुर्ग व्यक्ति की सलाह काम आयेगी। किसी समारोह में शामिल होने के अवसर प्राप्त होंगे।

कुंभ- पत्नी से वैचारिक मतभेद बढ़ेंगे। सोच-समझकर कोई भी निर्णय लेना, आपके पक्ष में रहेगा। नशे आदि की लत से बचें। कार्यक्षेत्र में भी दूसरों से टकराव रहेगा, प्रतिस्पर्धा की भावना बढ़ेगी। स्वयं पर नियंत्रण रखें।

मीन- सद्भावना का लाभ मिलेगा। यश की प्राप्ति होगी। कार्य समय पर सम्पन्न होने से मन-प्रसन्न रहेगा। नवीन वाहन खरीदने की योजना बनेगी। अनायास यात्रा आदि करनी पड़ेगी। कोई दुखद समाचार भी मिल सकता है।

सितम्बर माह- 2018

प्रमुख तीज-त्यौहार- ता. 1 हरछठ, ता.3 श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, ता.4 गोगा नवमी, ता.6 जया एकादशी, ता.12 हरतालिका तीज, ता. 13 गणेश उत्सव, ता. 14 ऋषि पंचमी, ता. 17 विश्वकर्मा पूजा, ता.20 डोल ग्यारस, ता. 22 प्रदोष व्रत।

मेष-घरेलू उलझनों से मुक्ति मिलेगी। रिश्तेदारी में जाना पड़ेगा। नये लोगों से परिचय बनेगा। विद्यार्थी वर्ग को उन्नति के योग। राजनैतिक प्रतिद्वंद्वी से प्रतिस्पर्धा रहेगी। कामकाज सुचारु रुप से चलेंगे। व्यय की अधिकता से बचें।

वृषभ- मेहनतकश लोगों के लिए समय अच्छा है। वेतनवृद्धि होगी। बोनस आदि का लाभ प्राप्त होगा। युवा स्त्री वर्ग में नये कार्यो का उत्साह रहेगा। खानपान पर ध्यान दें। उदररोग की संभावना रहेगी। लम्बे प्रवास की योजना बनेगी।

मिथुन- आपसी वैमनस्यता से बचें। बुजुर्गो की सलाह लाभ देगी। किसी भी कार्य के लिए किया गया वादा पूरा होगा। पारिवारिक आलोचना से बचें। अपनी जिम्मेदारी पर पूरा ध्यान दें। नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति होगी।

कर्क- दूरदृष्टि से किये गये कार्यो का परिणाम आपके हित में होगा। घर में कोई धार्मिक कार्य सम्पन्न होगा। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे। संतान की शिक्षा को लेकर थोड़ी परेशानियां उठानी पड़ेंगी। भूमि-भवन के कार्य बनेंगे।

सिंह- पुरातन विचारों को छोड़ें। पारिवारिक सुख हेतु ऐसा करने से जीवन में परिवर्तन के योग बनेंगे। यात्रा में सर्तकता बरतें। अपने सामान का ख्याल रखें, चोरी-चकारी का भय रहेगा। खेल संबंधी व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल है। सम्मान मिलेगा।

कन्या- आजीविका की चिंता रहेगी। ऋण या उधारी से बचें। धीरे-धीरे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। पुराने किये गये निवेश या बीमा की धनराशि प्राप्त होगी। प्रेम संबंध उजागर होने का भय रहेगा। वाहन चलाने में सतर्कता बरतें। दुर्घटना का भय रहेगा।

तुला- कामकाजी महिलाओं को पदोन्नति के योग बनेंगे। स्वास्थ्य संबंधी परेशानी दूर होगी। अदालत या न्यायिक कार्य में समझौता करने से लाभ। व्यापार-व्यवसाय की वृद्धि हेतु धन खर्च होगा। प्रेम-प्रसंगों में घनिष्ठता बढ़ेगी। अधिकारों को लेकर विवाद संभव है।

वृश्चिक- अतिविश्वास में न रहें। स्वयं के कार्य दूसरों पर न थोपें अन्यथा हानि होगी। पारिवारिक सुख-सम्पन्नता हेतु धर्म-कर्म में रुचि रखें। व्यापार में लाभ के आयाम बनेंगे। यदि नये कार्य की शुरुआत करनी है तो समय शुभ है। चल-अचल सम्पत्ति की खरीदी होगी।

धनु- आप किसी उत्सव-समारोह में शिरकत करेंगे। महिला मित्रों से सावधानी बरतें। सामाजिक संगठन या शिक्षा आदि संबंधित सोसायटी में पद-प्रतिष्ठा के योग बनते है। विवाह योग्य युवक या युवतियों के रिश्तेदारी हेतु बात आगे बढ़ेगी।

मकर- वैभव विलासिता की वस्तुओं पर धन खर्च होगा। शैक्षणिक उद्देश्यों की पूर्ति होगी। नये आवास में पदार्पण या किराये का मकान लोगे। कार्यो में भाई-बहनों का सहयोग प्राप्त होगा। वाणिज्य विकास के अवसर बनेंगे। व्यर्थ की भागदौड़ भी रहेगी।

कुंभ- गृहस्थ जीवन में कष्ट रहेगा। पत्नी से वैचारिक मतभेद से बचें। परोपकार से लाभ होगा। आत्मबल बढ़ेगा। कर्मचारियों को अधिकारी वर्ग की प्रताड़ना सहनी पड़ेगी। साहित्य अध्यापन या संगीत के कार्यो में रुचि बढ़ेगी। गुरुजनों का आशीर्वाद मिलेगा।

मीन- शासन-सत्ता के कार्यो में सफलता मिलेगी। धर्मस्थल के दर्शन हेतु बाहरी यात्रा संभव है। परिवार में एकता रहेगी। वस्त्र व्यवसायियों को धन लाभ होगा। घर में अतिथि आगमन के योग बनेंगे। वाहन के कार्यो पर धन खर्च होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक अरुण पटेल द्वारा प्रियंका ऑफसेट, 25-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल से मुद्रित कर ई-100/41, शिवाजी नगर, भोपाल, मप्र-462016, से प्रकाशित। **संपादक- अरुण पटेल**

फोन न.0755-2552432, मो. 9425010804, ईमेल: raghukalash@gmail.com

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। RNI No. MPHIN/2002/07269

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

MSME

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

उद्यमिता को बढ़ावा देने
मध्यप्रदेश सरकार की नई पहल
नि:शुल्क ऑनलाइन उद्यमिता विकास प्रशिक्षण

मोबाइल फ्रेंडली

आसान हिन्दी भाषा में

ऑडियो–वीडियो प्रस्तुति

प्रशिक्षण के बाद प्रमाणन

अपने सपने करें साकार, चलो अपनाएं 'स्वरोज़गार'

प्रशिक्षण कार्यक्रम की विशेषताएं

- यह प्रशिक्षण पूरी तरह नि:शुल्क होगा।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम की अवधि चार सप्ताह की होगी।
- 18 वर्ष से अधिक आयु के सभी युवा उद्यमी और बेरोज़गार इसमें भाग ले सकते हैं।
- ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का लिंक (URL) edp.mpmsme.gov.in है।
- उपरोक्त वेबसाइट पर जाकर प्रशिक्षणार्थी स्वयं को पंजीकृत कर सकेंगे।
- पंजीकृत उम्मीदवारों को एक यूजर आईडी और पासवर्ड उपलब्ध होगा।
- पंजीकृत उम्मीदवारों को अपने कम्प्यूटर के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त हो सकेगा।
- प्रशिक्षण के अंतर्गत सभी पाठ हिंदी भाषा में तथा ऑडियो–वीडियो प्रारूप में उपलब्ध रहेंगे।
- प्रशिक्षण के बाद उम्मीदवार की ऑनलाइन परीक्षा।
- ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर प्रशिक्षणार्थी को प्रमाणपत्र ऑनलाइन प्राप्त होगा।

D-17002/18

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विभाग
उद्योग संचालनालय

चौथी मंजिल, विंध्याचल भवन, भोपाल (मध्यप्रदेश)
फोन नं. : 0755 – 2677947 / 0755 – 2677988, **email** : infoedp@mp.gov.in

अक्टूबर : म.प्र. माध्यम/2018

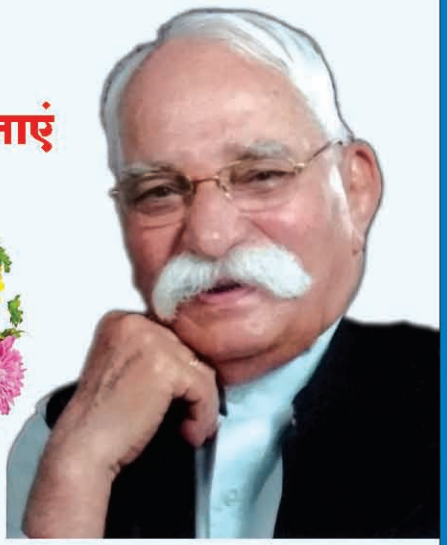

बधाई... बधाई... बधाई...
अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा के राष्ट्रीय
अध्यक्ष पूर्व मंत्री हजारी लाल रघुवंशी तथा
पूर्व मंत्री और अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय)
महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, विधायक
चौधरी चंद्रभान सिंह को
जन्मदिन की
हार्दिक शुभकामनाएं
राम नारायण मुकाती
राजेन्द्र रघुवंशी
योगेश रघुवंशी
श्रवण रघुवंशी
सज्जन सिंह जी
रम्मू भाई
हरी सिंह जी
जगदीश रघुवंशी
रतनसिंह रघुवंशी
बलवीर रघुवंशी
जगदीश रघुवंशी
परमेश्वर रघुवंशी
वीरेन्द्र रघुवंशी
कमल रघुवंशी
यतीन्द्र रघुवंशी
चन्दू रघुवंशी
प्रदेश महामंत्री एवं राष्ट्रीय
कार्यकारिणी सदस्य अभारक्षम
सौजन्य से: चन्दू रघुवंशी, प्रदेश महामंत्री अभारक्षम सागौर, धार